पटना विश्वविद्यालय, पटना

प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र

प्रतियोगिता परामर्श : 2018-19

न्यू ब्लॉक, स्नातकोत्तर रसायनशास्त्र विभाग

सायंस कॉलेज परिसर, पटना विश्वविद्यालय, पटना-5

PREPARED BY CREATIVO
07004751018, forcreativo1@gmail.com

प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र

पटना विश्वविद्यालय, पटना
पटना – 800005

स्थापित : 1987

प्रतियोगिता परामर्श : 2018-19

अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए संचालित
केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
मंत्रालय /राज्य सरकार के अनुसूचित जाति/
जनजाति कल्याण विभाग द्वारा संपोषित

न्यू ब्लॉक, स्नातकोत्तर रसायनशास्त्र विभाग
सायंस कॉलेज परिसर
पटना विश्वविद्यालय, पटना–5

विषय सूची

क्रम		पृ.संख्या
1	निदेशकों का कार्यकाल	4-4
2	प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र की सलाहकार समिति	5-5
3	अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, बिहार सरकार की ओर से पदस्थापित प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र के कर्मचारीगण	6-6
4	प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के झंडे बुलंद कर रहे केंद्र के होनहार	6-7
5	सपने देखना और उन्हें सच करना सिखा रहा प्री-ट्रेनिंग सेंटर, संचालित कोर्स, भविष्य के संकल्प	8-9
6	सुनहरे पल : फोटो फीचर	10-13
7	प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र, पटना विश्वविद्यालय के सफल छात्र-छात्राओं की सूची वर्ष 2016-17	14-15
8	वर्ष 2013-14, 2011-12 व वर्ष 2013-14 व वर्ष 2010-11 के सफल विद्यार्थियों की सूची	15-21
9	बिहार पुलिस सेवा में चयनित छात्र (सब इंस्पेक्टर)	22-22
10	बिहार प्रशासनिक सेवा-2010	23
11	वर्ष 2010-11 के सफल विद्यार्थियों की सूची	24
12	ग्रुप-बी, असिस्टेंट कमांडेंट-2009 (सेंट्रल पुलिस फोर्स)	24
13	वर्ष 2007-08 के सफल विद्यार्थियों की सूची	25
14	बिहार न्यायिक सेवा के लिए चयनित (2007)	25-26
15	वर्ष 2005-06 के सफल विद्यार्थियों की सूची	26-27
16	वर्ष 2004-05 के सफल प्रशिक्षणार्थियों की सूची	27-28
17	वर्ष 2003-04 के सफल प्रशिक्षणार्थियों की सूची	29-30
18	वर्ष 2001-02 के सफल प्रशिक्षणार्थियों की सूची	30-31
19	बैंकिंग एवं रेलवे की परीक्षा के लिए प्रशिक्षकों की सूची	32
20	बिहार न्यायिक सेवा की परीक्षा के लिए प्रशिक्षकों की सूची	32-33
21	मेडिकल एवं इंजीनियरिंग की परीक्षा के लिए प्रशिक्षकों की सूची	33

मन को हर्ष और उल्लासमय बनाओ, इससे हजारों हानियों से बचोगे और लंबी उम्र पाओगे - शेक्सपियर

22	यूपीएसी व बीपीएससी की परीक्षा के लिए प्रशिक्षकों की सूची	34
23	बीपीएससी 63वीं 2017-18 में प्रशिक्षण ले रहे छात्रों की सूची	35-39
24	प्रतियोगिता परीक्षा में उत्तर लिखते समय ध्यान देने वाली बातें	40
25	हिन्दुओं में प्रचलित कुछ निष्ठुर प्रथाएं	41
26	एक ऐतिहासिक पुरुष का जीवन : डॉ. भीम राव आंबेडकर	42-43
27	जल है तो कल है का अर्थ समझना होगा	44-45
28	कृत्रिम बुद्धिमत्ता : फायदा संग चिंताएं भी	46-47
29	भारत में विज्ञान का महत्व	48-49
30	नंबर सफलता की कसौटी नहीं	50-51
31	छात्रों के नाम निदेशक का पत्र	52-53
32	छात्रों के लिए प्रखर प्रेरणा का स्रोत है प्री-एग्जामिनेशन ट्रेनिंग सेंटर	54-55
33	अनमोल बातें	56

जिसमें फूट हो गई है और पक्ष-भेद हो गए हैं, ऐसा समाज किस काम का? आत्मप्रतिष्ठा संपन्न और मनुष्यों की एकता वाला ही समाज चाहिए। अलग रहकर जितना काम होता है, उससे सौ गुना संघ-शक्ति से होता है।
-योगी अरविन्द

इतिहास तो हर पीढ़ी लिखेगी
बार-बार पेश होंगे मर चुके लोग
जीवितों की अदालत में
बार-बार निकाले जाएंगे
कब्रों से कंकाल हार पहनाने के लिए
कभी फूलों के, कभी कांटों के
समय की कोई अंतिम अदालत नहीं होती और इतिहास अंतिम बार नहीं लिखा जाता।
-हॉब्स बाम

मनुष्य जैसा अपने हृदय में विचारता है, वैसा ही बन जाता है।-बाइबिल

निदेशकों का कार्यकाल

क्रम	नाम	कार्यकाल
1.	**डॉ. राम शंकर प्रसाद** विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर भौतिकी विभाग पटना विश्वविद्यालय, पटना	1987-1990
2.	**डॉ. रमाशंकर आर्य** प्रोफेसर दर्शनशास्त्र विभाग बीएन कॉलेज पटना विश्वविद्यालय, पटना	1990-1992
3.	**स्व. राजेंद्र राम** प्रोफेसर स्नातकोत्तर, भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग पटना विश्वविद्यालय, पटना	1993-1995
4.	**डॉ. रमाशंकर आर्य** प्रोफेसर दर्शनशास्त्र विभाग बीएन कॉलेज पटना विश्वविद्यालय पटना	1995-1996
5.	**स्व. डॉ. बीपी शास्त्री** विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग बीएन कॉलेज पटना विश्वविद्यालय, पटना	1997-2000
6.	**रिक्त**	2000-2002
7.	**डॉ. रमाशंकर आर्य** विभागाध्यक्ष दर्शनशास्त्र विभाग पटना विश्वविद्यालय, पटना	2003 से अब तक

जो मनुष्य अपनी विद्या और ज्ञान को कार्य रूप में परिणत कर सकता है वह दर्जनों कल्पना करने वालों से श्रेष्ठ है-इमर्सन

प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र

पटना विश्वविद्यालय, पटना की सलाहकार समिति

1. **प्रो. डॉ. एजाज अली अरशद,** पूर्व कुलपति एवं प्रधानाचार्य पटना कॉलेज पटना
2. **प्रो. डॉ. रमाशंकर,** स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
3. **डॉ. डेजी नारायण,** स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
4. **डॉ. विनय सोरेन,** स्नातकोत्तर राजनीतिशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
5. **डॉ. रमेंद्र नाथ,** स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

अनुसूचित जाति/अनु . जनजाति कल्याण विभाग बिहार सरकार की ओर से पदस्थापित प्रशिक्षण केन्द्र के कर्मचारीगण

क्रम	नाम	पद
1.	श्री शत्रुघ्न प्रसाद	लाइब्रेरियन
2.	श्री सुरेन्द्र प्रसाद	रात्रि प्रहरी
3.	श्री बिनोद राम	ब्लॉक सर्वेन्ट
4.	श्री करम चंद्र पासवान	चौकीदार

महान विचार जब कार्यरूप में परिणत हो जाते हैं, तब महान कृतियां बन जाती हैं।
-हैजलिट

प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के झंडे बुलंद कर रहे केंद्र के होनहार

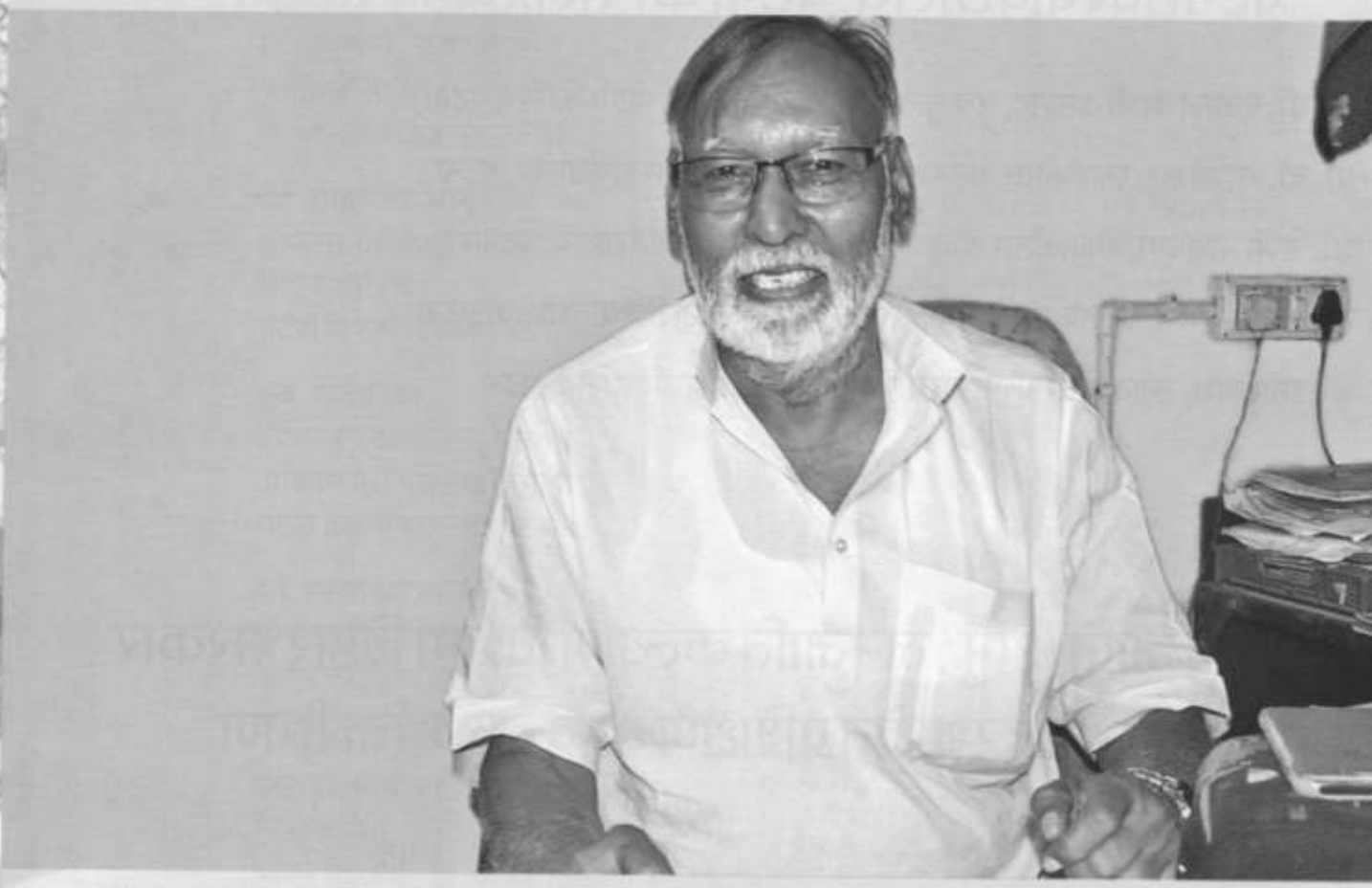

केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय एवं राज्य सरकार के अनुसूचित जाति/अनु. जनजाति कल्याण विभाग की पहल पर प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र 1987 से ही पटना विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थापित व संचालित है।

इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य रहा है समाज के कमजोर व पिछड़े वर्ग के छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन प्रदान करना, परामर्श देना तथा उन्हें सरकारी व गैर सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए प्रतिवर्ष कालबद्ध तरीके से प्रशिक्षण प्रदान करते रहना। यह केंद्र अपने इस उद्देश्य में पूर्णतः सफल रहा है तथा लगातार सफलता की नयी ऊंचाइयों को छू रहा है। राज्य सरकार भी इस केंद्र को एक आदर्श प्रशिक्षण केंद्र के रूप में स्वीकृति प्रदान कर चुकी है तथा इस केंद्र की सफलता को ध्यान में रखकर ही वर्ष 2013 में इसी केंद्र के अनुरूप राज्य के अन्य चार विश्वविद्यालयों (मगध विश्वविद्यालय, जेपी विश्वविद्यालय छपरा, वीर कुंवर सिंह विवि आरा और डॉ. बीआर आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर) में भी ऐसा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया है।

यह केंद्र लंबे समय तक सायंस कॉलेज के भौतिकीशास्त्र विभाग के एक-डेढ़ कमरे में किसी तरह संचालित होता रहा, लेकिन वर्ष 2004 के जून में इसका स्थान बदल कर इस कॉलेज के स्नातकोत्तर रसायनशास्त्र विभाग के नये भवन के प्रथम तल पर कर दिया गया, जहां यह वर्तमान में संचालित है। यह स्थान अब पटना विश्वविद्यालय की ओर से यह केंद्र विधिवत आवंटित है। केन्द्र के वर्तमान भवन परिसर में कुल छह कमरे हैं, जिनमें तीन बड़े हॉल तथा तीन छोटे-छोटे कमरे हैं। पर्याप्त

जगह उपलब्ध हो जाने से केंद्र को अपना पुस्तकालय कक्ष तथा छात्रों के लिए वाचनालय की व्यवस्था भी की जा चुकी है। बिहार सरकार के अनुसूचित जाति कल्याण विभाग के सहयोग से पुस्तकालय में छात्रों के लिए उपयोगी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं। इससे छात्र लाभान्वित भी हो रहे हैं।

वर्ग-संचालन के लिए उपस्करों एवं अन्य भौतिक संसाधनों की व्यवस्था विश्वविद्यालय की ओर से होनी थी, किन्तु इस तरह की व्यवस्थाएं केंद्र को ही अपने सीमित संसाधनों के सहारे करना पड़ रहा है। उपस्कर एवं अन्य संसाधन अपर्याप्त हैं फिर भी केंद्र के प्रबंधन की मेहनत एवं लगातार प्रयास के चलते संसाधनों की कामचलाऊं व्यवस्था स्थापित हो चुकी है। ध्यातव्य है कि विश्वविद्यालय ने इस केंद्र को संचालित करने की जिम्मेदारी ली है, लेकिन इस केंद्र के प्रति विश्वविद्यालय प्रशासन की उदासीनता आसानी से अवलोकित की जा सकती है।

बिहार के प्रायः सभी जिलों से इस केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए छात्र आते हैं। सुखद बात यह है कि प्रत्येक वर्ष सैकड़ों की संख्या में छात्र इस केंद्र से प्रशिक्षण प्राप्त करके निकल भी रहे हैं और विभिन्न सेवाओं के लिए चयनित भी हो रहे हैं। निश्चित ही यह पटना विश्वविद्यालय की गरिमा के अनुकूल है। यहां के छात्रों ने अपने आचरण या व्यवहार से सायंस कॉलेज-प्रशासन या विश्वविद्यालय-प्रशासन को कभी भी कोई शिकायत का मौका नहीं दिया है। केंद्र की यह बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी। इस केंद्र पर इस तरह के अकादमिक माहौल तैयार करने में एवं छात्रों को सफलता दिलाने में केंद्र की प्रशासनिक-दक्षता के साथ-साथ यहां के प्रशिक्षकों की प्रशिक्षण, सेवा-भावना भी अपनी बड़ी भूमिका निभाती रही है। एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि इस केंद्र में न केवल अध्ययन-अध्यापन या प्रशिक्षण कार्य संचालित होता है, अपितु प्रशिक्षणार्थियों के बीच आपसी सद्भाव, भाई-चारा, शिष्टता एवं शालीनता के बीज भी बोए जाते हैं। यहां के छात्रों में पढ़ाई के साथ-साथ सुयोग्य एवं आदर्श नागरिक बनने के संस्कार भी भरे जाते हैं। यहां के छात्रों में बौद्धिकता एवं तार्किकता के विकास के साथ-साथ यह भी प्रयास किया जाता है कि छात्रों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति का पूर्ण विकास हो। जिसका लाभ ये अपने पारिवारिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक जीवन में उठा सकें। छात्रों के अंदर वैज्ञानिक मनोवृत्ति के विकास के लिए समय-समय पर व्याख्यान भी आयोजित कराए जाते हैं।

यह केंद्र समाज के आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के छात्रों के सहयोगार्थ संचालित है, जहां अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र-छात्राएं सद्भावनापूर्ण माहौल में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। निर्धारित पाठ्यक्रम एवं वैकल्पिक विषयों के अध्यापन के लिए पटना विश्वविद्यालय के स्वनामधन्य प्राध्यापकगण अपना बहुमूल्य समय दे रहे हैं। कभी-कभी विशिष्ट व्यक्तियों के व्याख्यान भी आयोजित किये जाते हैं। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले यहां के छात्रों को सरकारी नियमानुसार वृत्तिका भी प्रदान की जाती है। यहां वृत्तिका प्रदान करने की विधि अत्यंत सरल व सहज है। सरकार से वृत्तिका की राशि की प्राप्ति में विलम्ब होने के कारण कभी-कभी छात्रों को परेशानी का सामना करना पड़ जाता है, लेकिन यह सब क्षणिक ही होता है।

छात्रों को नियमित वृत्तिका के अतिरिक्त उम्दा अध्ययन-सामग्री भी उपलब्ध करायी जाती है तथा वर्ग-संचालन भी सुव्यवस्थित तरीके से कराया जाता है। गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण के चलते ही पढ़ाई के दौरान ही कई छात्र विभिन्न सेवाओं में चले गए और ऐसी उम्मीद की जाती है कि यह परम्परा आगे भी चलती रहेगी। विगत सात वर्षों से यह केंद्र अप्रत्याशित सफलता अर्जित कर रहा है। केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय परीक्षाओं में यहां के छात्र लगातार चयनित हो रहे हैं। बिहार प्रशासनिक सेवा, बिहार न्यायिक सेवा, बिहार शिक्षा सेवा, बिहार पुलिस सेवा के अलावा अन्य सेवा में भी यहां के छात्र अंतिम रूप से चयनित हुए हैं, जिनकी सूची इस वार्षिकी में दर्ज है। शिक्षकों एवं विभिन्न विभाग के कर्मचारियों के रूप में चयनित होने वाले छात्रों की संख्या भी काफी अच्छी है। ऐसे सफल छात्रों की सूची भी इस वार्षिकी में संलग्न है।

इसके पहले की सूची पूर्व प्रकाशित पत्रिका में उपलब्ध है। केंद्र के सफल छात्रों की सूची भी इस पत्रिका में दी गई है। हालांकि बहुत सारे सफल छात्रों के नाम छूट गए हैं, क्योंकि इनकी विधिवत जानकारी केंद्र को भी अब तक नहीं मिल पायी है। हम अपने आगामी अंकों में उन्हें जोड़ने का प्रयास करेंगे।

अंत में, विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं, खासकर अपने माननीय कुलपति महोदय, कुलसचिव महोदय तथा संकायाध्यक्ष महोदय, छात्र कल्याण एवं इस केंद्र से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े उन सभी शिक्षकों के प्रति, जिनके द्वारा इस केंद्र को सकारात्मक सहयोग प्राप्त होता रहा है।

इस केंद्र की सलाहकार समिति के माननीय सदस्य प्रो.एजाज अली अरशद, प्रो. डेजी नारायण एवं प्रो.विनय सोरेन के सफल निर्देशन एवं मार्गदर्शन में यह केंद्र अपने अकादमिक एवं प्रशासनिक दायित्व का निर्वहन कर रहा है। इस केंद्र से जुड़े हम सभी सदस्य अपने इन सभी माननीय सलाहकार समिति के सदस्यों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

अंत में, बिहार सरकार के माननीय अनुसूचित जाति/जनजाति कल्याण मंत्री, सचिव, सहायक निदेशक तथा सहायक कल्याण विभाग श्री अनिल कुमार सिन्हा, जिला कल्याण कार्यालय के जिला कल्याण पदाधिकारी एवं नाजिर, प्रधान सहायक से भी इस केंद्र को भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहा है। इन सभी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं तथा विश्वास रखते हैं कि भविष्य में भी आप सबों का पूर्ववत् सहयोग इस केंद्र को प्राप्त होता रहेगा।

धन्यवाद
डॉ. रमाशंकर आर्य
निदेशक

सपने सच करना सिखा रहा प्री-एग्जामिनेशन ट्रेनिंग सेंटर

प्रशिक्षण केंद्र की ओर से संचालित कोर्स

1. संघ लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा
2. राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा
3. बैंकिंग तथा रेलवे की परीक्षा
4. मेडिकल एवं इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा (अनियतकालीन)
5. बिहार न्यायिक सेवा की परीक्षा (अनियतकालीन)

पटना विश्वविद्यालय में चल रहा प्री-ट्रेनिंग सेंटर तीन दशक से अधिक समय से गरीब बच्चों के सपने सच करने में जुटा है। कुशल शिक्षकों के निर्देशन में वर्ष 1987 से लगातार यहां के बच्चे यूपीएससी, बीपीएससी, नेट, रेलवे, एसएससी समेत दर्जनों परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करते आ रहे हैं। संस्थान से निकले कई बच्चे बतौर प्रशासनिक अधिकारी भी काम कर रहे हैं, जो यहां आने वाले नए बच्चों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। वे यहां के नए छात्र-छात्राओं को सफलता का शिखर छू लेने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षकों के बेहतर मार्गदर्शन का ही नतीजा है कि संस्थान से निकले 700 से अधिक छात्र-छात्राएं फिलहाल आईएएस अधिकारी, बैंक पीओ, आरडीओ, जिला अल्पसंख्यक कल्याण पदाधिकारी, सब इंस्पेक्टर, असिस्टेंट कमांडेंट, रेलवे सेक्शन इंजीनियर, एसएम, गुड्स गार्ड, शिक्षक-प्रोफेसर, सीडीपीओ, प्रोग्राम ऑफिसर समेत कई पदों पर काम कर रहे हैं। वे बिहार के साथ ही देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं।

यहां की एक और खासियत है युवाओं में नैतिक ज्ञान भरना। संस्थान के निदेशक रमा शंकर आर्य लगातार 'समाज ने जो दिया है उससे अधिक समाज को लौटाने' के लिए यहां के छात्रों को प्रेरित करते हैं। इनके मार्गदर्शन में यहां के अनुभवी शिक्षक बच्चों को एक योग्य नागरिक भी बनने के लिए प्रेरित करते हैं, ताकि ये बच्चे अपने सामाजिक दायित्वों का भी ईमानदारी से निर्वहन करें। निदेशक खुद बच्चों की काउंसिलिंग करते हैं और छात्र-छात्राओं को बड़े लक्ष्य बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। यहां के छात्र रहे आईएएस रणजीत कुमार सिंह लगातार बिहार के युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। जब भी उन्हें छात्रों को मोटिवेट करने का अवसर मिलता है, वे कैरियर में सफलता की बारीकियां बताते हैं। ऐसे सैकड़ों छात्र अपनी उपलब्धियों से संस्थान का मान बढ़ा रहे हैं।

लाइब्रेरी है खास

किसी भी संस्थान को बेहतर बनाने में लाइब्रेरी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। राष्ट्रीय स्तर के कई संस्थान तो अपनी उच्च स्तरीय लाइब्रेरी के लिए भी देशभर में प्रसिद्ध हैं। प्री-ट्रेनिंग सेंटर में भी एक समृद्ध लाइब्रेरी है। इसमें विभिन्न विषयों की पांच हजार से अधिक किताबें हैं। समय-समय पर नई किताबें भी खरीदी जाती हैं, ताकि छात्रों को महंगी किताबें खरीदने की चिंता नहीं रहे। प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारियों से जुड़ी अच्छे लेखकों की किताबें रहने से आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को काफी सहूलियत होती है। वे लाइब्रेरी में बैठकर घंटों अध्ययन करते हैं। जरूरत पड़ने पर ये इन्हें इश्यू कराकर घर भी ले जाते हैं। लाइब्रेरी में रोजाना स्थानीय हिन्दी-अंग्रेजी समाचार पत्रों हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, प्रभात खबर के अलावा दिल्ली से प्रकाशित जनसत्ता, द हिन्दू, इंडियन एक्सप्रेस समेत कई न्यूज पेपर मंगाए जाते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर की मासिक पत्रिकाएं भी उपलब्ध रहती हैं। प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी से जुड़ी सभी प्रमुख पत्रिकाएं भी विशेष रूप से खरीदी जाती हैं।

दाखिले का तरीका

ट्रेनिंग सेंटर में दाखिला साल में दो बार होता है। दिसंबर में सिविल सर्विसेज के लिए प्रवेश लिया जाता है। इसी तरह जून-जुलाई में बैंकिंग और रेलवे की परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्र आते हैं। यहां दाखिला के लिए एक टेस्ट भी आयोजित होता है जो क्रमशः दिसंबर और जून में होता है। इसमें पास करने वाले विद्यार्थी को संस्थान में प्रवेश मिलता है। जुलाई से नवंबर तक चलने वाले सत्र में 120 विद्यार्थियों का चयन होता है। इनमें 60-60 बैंकिंग और रेलवे वर्ग के लिए छात्र होते हैं, जबकि जनवरी से मई सत्र में 60 सीटों पर दाखिला होता है। हालांकि सरकार के स्तर पर सीटों की संख्या बढ़ाने पर विचार चल रहा है। यहां सिर्फ अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रों का दाखिला होता है। यहां नामांकन लेने वाले छात्रों को तीन हजार रुपए प्रति माह स्कॉलरशिप भी मिलती है। हालांकि इसे भी अब बढ़ाकर पांच हजार रुपए करने पर विचार चल रहा है।

भविष्य के संकल्प

1. दलित एवं कमजोर वर्ग के छात्रों के लिए परामर्श केंद्र स्थापित करना
2. रोजगार के लिए रोजगार ब्यूरो की स्थापना करना
3. व्यावसायिक एवं रोजगारोन्मुखी शिक्षा के लिए अल्पावधि के पाठ्यक्रमों को संचालित करने का प्रयास करना
4. दलित संसाधन केंद्र स्थापित करने का प्रयास
5. दलित छात्रा-छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए अध्ययन सामग्री तैयार करना तथा बिहार के सभी कल्याण छात्रावासों में वितरित कराने का प्रयास करना
6. वर्तमान प्रशिक्षण केंद्र पर दलित छात्रों के लिए पुस्तकालय सेवा उपलब्ध कराना तथा पढ़ने के लिए अनुकूल माहौल बनाना
7. देश-विदेश में संचालित उच्च शिक्षा केंद्रों की समुचित जानकारी दलित छात्रों को प्रदान करना
8. शोध कार्य करने वाले सभी दलित छात्रों को शोध सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास करना तथा उससे संबंधित सही मार्गदर्शन प्रदान करना
9. NET, JRF, SRF, Pre Ph.D जैसी परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना
10. बिहार के दलित तथा महादलित छात्रों से संबंधित विभिन्न विषयों पर विवरणी एवं Status Report तैयार करना
11. दलित एवं कमजोर वर्ग के उन्नयन, विकास एवं समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए केंद्र व राज्य सरकार को समय-समय पर परामर्श प्रदान करना
12. बिहार के कमजोर व दलित वर्ग के छात्रों को विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के साक्षात्कारों में जाने से पूर्व उन्हें छद्म साक्षात्कार (मॉक इंटरव्यू) द्वारा प्रशिक्षित करना तथा उनके मनोबल को बढ़ाने का प्रयास करना

7. दलित छात्रों के लिए परामर्श एवं पुस्तकालय संचालन
8. राज्य सरकार के निर्देशानुसार अन्य प्रशिक्षण कार्य
9. समय-समय पर विभिन्न परीक्षाओं में व्यक्तिगत साक्षात्कार के लिए मॉक इंटरव्यू

कुलपति की ओर से भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित श्री रणजीत कुमार सिंह का सम्मान।

कुलपति वाईसी सिम्हाद्री द्वारा सत्र के संचालन का उद्घाटन, केंद्र के निदेशक डॉ. रमाशंकर आर्य कुलपति को प्रतीक चिह्न देते हुए।

प्री-एग्जामिनेशन ट्रेनिंग सेंटर में कक्षा के दौरान शिक्षक की बातों को सुनते सत्र 2014-15 के छात्र-छात्राएं।

संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में छात्रों को छात्रवृति का चेक प्रदान करते कल्याण विभाग के अधिकारी।

तत्कालीन कल्याण मंत्री श्री जीतनराम मांझी व कुलपति डॉ. शंभूनाथ सिंह अध्ययन सामग्री वितरित करते हुए।

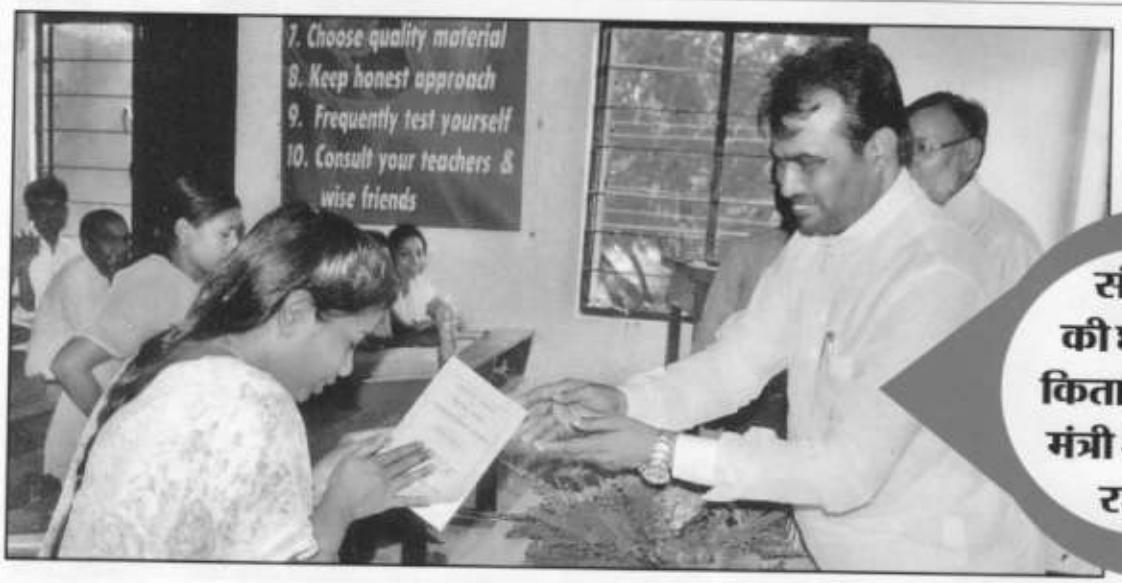

संस्थान की छात्रा को किताब देते पूर्व मंत्री श्री श्याम रजक।

प्रेम कुमार मणि द्वारा आंबेडकर जयंती का उद्घाटन।

डॉ. उदय नारायण चौधरी द्वारा डॉ. राजेंद्र राम का सम्मान।

Grow

प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र, पटना विश्वविद्यालय के सफल छात्र-छात्राओं की सूची

वर्ष 2016-17

क्र.	नाम	पिता का नाम एवं पता	पद
1	महेश कुमार महान	श्री राजेश्वर चौपाल, ग्राम-लिलजा, पो-टेगराहा, थाना-भेजा, मधुबनी मो.-8409244815	Regional Manager भूमि विकास बैंक, सीतामढ़ी
2	सुमित कुमार	खान मिर्जा, धेबी टोला, सुल्तानगंज, पो-महेंद्रू, पटना	Canara Bank, Single Window Operator, Purnia
3	सुजाता कुमारी	श्री सुरेश रजक विद्यापति कॉलोनी , पो-जीपीओ, पटना, मो-9525433385	Patna High Court Assistant
4	सत्येन्द्र कुमार रजक	श्री राम जनम पासवान ग्राम-परवलपुर,पो-परवलपुर, जिला-नालंदा मो-9507493435	सचिवालय सहायक
5	प्रशान्त कुमार	श्री भुवनेश्वर राम,ग्राम-राघोपुर बखरी, पो-सीतामढ़ी, जिला-सीतामढ़ी , मो-9708212457	Intelligence Bureau केन्द्र सरकार
6	अमृता सिन्हा	श्री आनंद कुमार प्रभाकर ग्राम-बलियापुर, पो-सतामस, थाना-खिजरसराय, जिला-गया मो-8541968080	बिहार विकास मिशन IT Superviser वैशाली

सर्वोत्तम मनुष्य वे नहीं हैं जो अवसरों की बाट जोहते हैं, अपितु वे हैं जो अवसरों को अपना दास बना लेते हैं।-ई.एच. चेपिन

7	अशोक कुमार अमर	श्री बासुदेव दास ग्राम-महिमापुर, पो-मथुरापुर,थाना-कोचरा जिला-जहानाबाद मो-9006750243	सचिवालय सहायक
8	संतोष कुमार चौधरी	श्री देवनंदन चौधरी ग्राम-कासीमचक, पो-बेलहौरी, थाना-दुल्हिनबाजार, जिला-पटना मो-8271566491	Assistant Loco Pilot
9	चन्देश्वर राम	श्री रामाशीष राम, ग्राम-लामीचौर पो-लामीचौर , थाना-मोरे, जिला-गोपालगंज मो-7549378965	Railway Group-D
10	बबलू कुमार सुमन	श्री महेन्द्र राम ग्राम-गोबास, पो-कुटुम्बा, थाना-कुटुम्बा, जिला-औरंगाबाद मो-9504455125	Railway
11	सचिन कुमार	श्री अमेरिकन पासवान ग्राम-बाकरपुर पो-जट, थाना-डुमरी पुनपुन, जिला-पटना मो-8987261576	Joint Clerk Central Bank Of India Pratappur

वर्ष 2013-14 के सफल छात्रों की सूची

क्र.	नाम	पिता का नाम एवं पता	पद
1	शक्ति कुमार पासवान	श्री सुरेश पासवान, ग्राम-निमा, पो-चान्दपुरा, जिला-बेगूसराय	कोल इंडिया लिमिटेड में कम्युनिटी डेवेलपमेंट ऑफिसर
2	मनीष कुमार	श्री मनमोहन रजक, ग्राम+पो.-बिदुपुर बाजार, जिला-वैशाली	क्लर्क, यूको बैंक, मानसी, कटिहार
3	उषा कुमारी	श्री अम्बिका प्रसाद चौपाल, ग्राम-सदाकत आश्रम, पो-सदाकत आश्रम, जिला-पटना	क्लर्क, यूको बैंक, मानसी, कटिहार

स्वच्छता और श्रम मनुष्य के सर्वोत्तम वैद्य हैं।
-रोमसिन

4	हर्ष राज भारती	श्री कृष्णा प्र.रविदास, ग्राम-भोगलपुरा, वेटंगाना, पो-पटना सिटी, जिला-पटना	क्लर्क, यूको बैंक, मानसी, कटिहार
5	वीरेन्द्र प्रसाद	श्री रामाश्रय चौधरी, ग्राम-मौतवीचक, पो-चाकन्द, थाना-चन्दौती, गया	बिहार स्टेट फूड एंड सिविल सप्लाई ऑफिस क्लर्क, गया
6	रवीन्द्र कुमार निराला	श्री नन्दलाल राम, ग्राम-सरेया, सरेया, कैमूर	+2 शिक्षक, भभुआ
7	नरेन्द्र कुमार पासवान	श्री शिव नंदन पासवान, ग्राम-रैठा, पो-गुंजर चक, जिला-नालंदा	इंदिरा आवास सहायक, प्रखंड-थरथरी, नालंदा

वर्ष 2011-12 एवं 2012-13 के सफल छात्र

क्र.	नाम	पिता का नाम एवं पता	पद
1	सचिदानन्द विश्वास	पिता-श्री नेवालाल विश्वास ग्राम+पो-गेहूमा बेरिया, जिला-मधुबनी रोल नंबर-179158 मो.-8877291157	बिहार वित्त सेवा
2.	शशिकान्त प्रसाद	पिता-श्री मौरी पासवान ग्राम-चकथिद, पो-मझौली, जिला-पटना रौल नं.-150035 मो-8051447838	आरडीओ
3.	चन्द्रगुप्त कुमार बैठा	पिता-श्री सुखराज बैठा ग्राम-संगवाडीह डेडखा, पो-बोधाछापर जिला-गोपालगंज, बिहार मो-9931291520 रौल नं.-202437	आरडीओ

इसकी कल्पना भी मत करो कि अवसर तुम्हारे द्वार पर दुबारा आकर पुकारेगा।
-चैम्फर्ट

4.	शिवांगी कुमारी	पिता-श्री सुशील कुमार नियर सोना होटल मेन रोड मोतिहारी मो-8797286217 रोल नं.-266377	आरडीओ
5.	अनिल कुमार	पिता-श्री मिथिलेश साह ग्राम-सुन्दरपुर बीड़ा लालबाग,दरभंगा-846004 मो-9471087141	आरडीओ
6.	बिहारी लाल	पिता-श्री प्रकाश प्रसाद ईस्ट ऑफ रोज गार्डन अपार्टमेंट पाइप फैक्ट्री के विपरीत महात्मा गांधी नगर, पटना	Asst. Registrar, Co-operative
7.	चन्दा कुमारी	पिता-श्री धीरेन्द्र कुमार यादव ग्राम-कठरवा, पो-महेंद्रू जिला-मधेपुरा रोल नं.-259772 मो-9430412047	आरडीओ
8.	नम्रता	पिता-श्री अमित कुमार हाउसिंग कॉलोनी चंदवा, आरा मो-8986564252 रोल नं-111399	आरडीओ
9.	आनन्द मोहन	पिता-सुरेन्द्र रजक ग्राम-पूर्वी इंदिरा नगर, रोड-3 कंकड़बाग, पटना-20 मो.-8681048445	आरडीओ
10.	शकील रज़ा	पिता-मो.अली इमाम ग्राम-मनियारावा, पो-खजौली जिला-मधुबनी	Sub Registrar
11.	सुमिता कुमारी	पिता-श्री विद्यासागर सिंह ग्राम-सोहरा, पो-कंचनपुर नौबतपुर जिला-पटना	आरडीओ

मस्तिष्क के लिए अध्ययन की इतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की। -जोजेफ एडिसन

12.	चंदन कुमार	पिता-श्री भागीरथ पासवान ग्राम-चन्दपुरा साहाबाद, पो-मोहनपुर, जिला-वैशाली मो-9931063377	जिला अल्पसंख्यक कल्याण पदाधिकारी
13.	आनन्द प्रकाश	ग्राम-पो-भोभी, थाना-नगरनौसा जिला-नालंदा मो-8539026531 रोल नं-276370	आरडीओ
14.	प्रतिभा कुमारी	पिता-श्री तूफानू लाल मांझी ग्राम-शांति कुंज, प्रेमनगर बहादुरगंज, जिला-किशनगंज	प्रोबेशनरी ऑफिसर (कारा विभाग)
15.	निवेदिता मंडल	पिता-श्री कैलाश चन्द्र मण्डल, 204/ए, देवाश्रय अपार्टमेंट, भिखना पहाड़ी, पटना	Deputy Factory Manager (UPSC-2011)
16.	कन्हैया कुमार	आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी, पटना	कम्प्यूटर ऑपरेटर
17.	गोपाल पासवान	पिता-श्री भिखारी पासवान	Asst. Goods Guard
18.	रामाकान्त चौधरी	पिता-श्री दीनानाथ चौधरी ग्राम-गोयालपुर, पो-तेजबिगहा, थाना-कांकी, जहानाबाद	स्टेशन पोटर
19.	आशुतोष कुमार	पिता-श्री हरेन्द्र मांझी ग्राम+पो.-गोविन्दपुर, थाना-भगवानपुर, जिला-सीवान	एरिया को-ऑर्डिनेटर, जीविका
20.	विमल कु.पासवान	पिता-श्री बासुदेव पासवान ग्राम-विशौल, पो.-तातौर, जिला-दरभंगा 9576103163	एरिया को-ऑर्डिनेटर, जीविका

अप्पो दिपो भवः अर्थात् अपना प्रकाश खुद बनो, अपना गुरु खुद बनो।
-महात्मा बुद्ध

30.	अजय कुमार रजक	पिता-श्री राम नरेश बैठा तारणी प्रसाद लेन घसियारी गली निकट मस्जिद, पो-झाउगंज, पटना-8	Assistant L.I.C.
31.	सुनील कुमार	पिता-श्री योगेन्द्र पासवान ग्राम-रामपुर उगन, पो.-बह्मपुरा, मुजफ्फरपुर, मो-9835094506	Assistant Director/Senior Scientist Officer Bihar State Forensic Laboratory, Patna
32.	रश्मि	श्री बच्चू पासवान ग्राम-चितकोहरा, आंबेडकर चौक, पो-अनिसाबाद, पटना	एसटीईटी
33.	सुमन कुमार	पिता-श्री एमके राम धेली, मुजफ्फरपुर	Agriculture College Tirinut
34.	सुकर राम रोहतास	पिता-श्री रामनाथ पासवान	टीईटी
35.	अनुज कुमार	पिता-श्री रामानन्द राम ग्राम-पूर्णिया, पो-नरकटियागंज, पश्चिम चंपारण, मो-9472967960	Assistant Section Officer Patna High Court
36.	चुनचुन चौधरी	श्री बाबूलाल चौधरी जी.डब्ल्यू, हॉस्टल, पटना	यूबीआई लिपिक
37.	संतोष कुमार	पिता-श्री जगदीश रजक ग्राम-खजुरबन्ना, महेंद्रू, पटना	ग्रुप डी
38.	मोनिका कुमारी	पिता-श्री राजकपूर रजक दुजरा देवी स्थान, पो-जीपीओ, थाना-बुद्धा कॉलोनी, जिला-पटना	टीईटी बख्तियारपुर

जीवन की दो ही गति है-एक बहिर्गामी ओर दूसरा अंतःगामी।
-महात्मा बुद्ध

वर्ष 2010-11 के सफल विद्यार्थियों की सूची

क्र.	नाम	पिता का नाम	पता	पद
1	कुलदीप कुमार चंदन	श्री सुग्रीव जी राम	ग्राम-Q.N.-T/1(F) सीवान जंक्शन रेलवे स्टेशन, सीवान	Central Bank of India, P.O.
2	राकेश कुमार	श्री किशोरी रजक	पुरानी बाजार, नया टोला, लखीसराय	Union Bank of India, P.O.
3	गोपाल पासवान	श्री भिखारी पासवान	ग्राम-बजराढ़ी, पो.कुदरा, जिला-कैमूर	Central Exise Inspector
4	अर्जुन कुमार	श्री रामानन्द राम	पुरैनिया, पो.-नरकटियागंज, वेस्ट चम्पारण, बिहार	Assistant Section Officer (Patna High Court)
5	राजेश कुमार पासवान	श्री सुंदर देव पासवान	ग्राम+पो-सेरुकहा, जिला-छापरा	Goods Guard (Railway)
6	धर्मेन्द्र कुमार	श्री कैलाश प्रसाद पासवान	ग्राम+पो-गोआवा शेखपुरा, वार्ड-5, जिला-पटना	बैंक ऑफ इंडिया (लिपिक)
7	ज्ञानचन्द रविदास	श्री बृजनंदन रविदास	ग्राम-मखदुमपुर, पो-गुरुशरण पुर, जिला-नालंदा	बैंक ऑफ इंडिया (लिपिक)
8	धनंजय पासवान	श्री हरिचरण पासवान	ग्राम+पो-बुढ़रा, जिला-पटना	Central Bank of India, Clerk
9	अनिल कुमार	श्री बसंत दास	गुरुदेव टोला, पो-मोकामा, जिला-पटना	Data Entry Operator Mahadalit Vikash Mission
10	मनोरंजन कुमार	श्री मथुरा राम	ग्राम-महु आबाग, पो-सहायनगर, जिला-पटना	Data Entry Operator
11	विनय कुमार	श्री अशोक कुमार	ग्राम-कायमगंज, पो-मखदुमपुर, जिला-जहानाबाद	Community Co -ordinator, Jivika
12	प्रभात कुमार	श्री विशेश्वर रविदास	ग्राम+पो-भोरे, जिला-गया	Community Co -ordinator, Jivika

अध्ययन हमें आनंद प्रदान करता है, अलंकृत करता है और योग्यता प्रदान करता है। -फ्रांसिस बेकन

बिहार पुलिस सेवा में चयनित छात्र (सब इंस्पेक्टर)

क्र.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	पता
1	विजय कुमार चौधरी	श्री कपिल देव चौधरी	ग्राम+पो-बेलसंडी तारा, जिला-समस्तीपुर
2	राजीव रोशन	श्री योगेन्द्र ठाकुर	ग्राम-बटेश्वरनाथ, पो-धंधुआ देशरी, जिला-वैशाली
3	मृत्युंजय कुमार पासवान	श्री जमाधर पासवान	ग्राम-श्रीनगर, पो-मैरवा, जिला-सीवान
4	परशुराम सिंह	श्री रघुराज सिंह	ग्राम-राघो डीहरा, पो-दावत, जिला-रोहतास
5	मुकेश कुमार मंडल	श्री ललन प्रसाद मंडल	ग्राम+पो-गढ़बरूआरी, जिला-नालंदा
6	स्वरनील शरण	श्री सिया मोहनी शरण	ग्राम+पो-दनियावां, जिला-नालंदा
7	विमलेश कुमार पासवान	श्री राजेन्द्र पासवान	ग्राम+पो-उगाहनी, जिला-रोहतास
8	मंजित कुमार गुप्ता	श्री विजय कुमार	ग्राम+पो-नादरीगंज, जिला-नवादा
9	राकेश कुमार	श्री नारायण बिन्द	ग्राम+पो-मुकुरीया, जिला-कटिहार
10	मो. शहनवाज आलम	मो. कलीमुद्दीन	ग्राम-पुरंदाहा, पो-डोरिया, सोनापुर, जिला-अररिया
11	नसीर अहमद	स्व.हेदायत हुसैन	ग्राम-फाजीलटोला, पो-कैलगढ़, जिला-सीवान
12	रजनीश कुमार	श्री जयप्रकाश नारायण राय	ग्राम-लालपोखा दीघी, पो.-दीघी, जिला-वैशाली
13	अमित कुमार सागर	श्री योगेन्द्र प्रसाद	ग्राम-कमराइन, पो.-डालमियानगर, जिला-रोहतास
14	अनिल कुमार	श्री शिवबहादुर राम	पोस्टल कॉलोनी, फाजलगंज, पो-सासाराम
15	अमन आनन्द	श्री रामराज रजक	लोहानीपुर, पो-कदमकुआं, जिला-पटना
16	शिव कुमार पासवान	श्री फूलदेव पासवान	ग्राम-बसहा, पो-बड़हारा, जिला-मधुबनी
17	नागेन्द्र पासवान	श्री बंधु पासवान	ग्राम-नायकपुर, पो-उगहनी, जिला-सासाराम
18	विजय कुमार चौधरी	श्री कपिलदेव चौधरी	ग्राम+पो-वेलसंडी तारा, जिला-समस्तीपुर
19	अजित कुमार राम	श्री प्रदीप प्रसाद	ग्राम-मठ गुलनी, पो-बारी गुलनी, जिला-नवादा
20	अमित कुमार	श्री विनोद कुमार दास	ग्राम+पो-सलखुआ, श्री रतन प्रसाद यादव जिला-सहरसा
21	धर्मेंद्र कुमार	श्री श्याम बिहारी प्रसाद	ग्राम -तेनार, थाना-नोखा, जिला-रोहतास

प्रकृति की अपेक्षा अध्ययन के द्वारा अधिक व्यक्ति महान बने हैं।
-सिसेरो

बिहार प्रशासनिक सेवा-2010

क्र.	नाम	क्रमांक संख्या	पिता का नाम	पता	पद
1	मनोज कुमार रजक	104581	स्व. राजकुमार बैठा	ग्राम-धेबी टोला, पो-रामनगर, जिला-चम्पारण	बिहार प्रशासनिक सेवा
2	मो. इश्तियाक अजमल	245361	मो. शफीक अहमद	सदाकत मंजिल, रोड, राजारिक चौक, झाझा	बिहार प्रशासनिक सेवा
3	संतोष कुमार सिंह	180944	श्री गोरख सिंह	ग्राम-देवरीया पो-पहलेजा, जिला-रोहतास	अवर निर्वाचन पदाधिकारी
4	असगर आलम खां	128019	मो.मुश्ताक खान	ग्राम-पीरो, पो-हसनपुरा, जिला-औरंगाबाद	बिहार शिक्षा सेवा
5	मो. शिब्गातुल्लाह	117258	मो. इशाक	मोहल्ला आलमगंज, पो-गुलजारबाग, जिला-पटना	बिहार प्रशासनिक सेवा
6	हरेन्द्र कुमार मांझी	146103	स्व. जूठन मांझी	ग्राम-नवलपुर, पो.-अंसार, वाया-चैनपुर, जिला-सिवान	वाणिज्य कर पदाधिकारी
7	विनिता		श्री ब्रह्मदेव राम	एमआईजी कंकड़बाग, बस स्टैंड के पास, पटना-20	बिहार प्रशासनिक सेवा
8	रोहित राज सिंह	204820	डॉ. सीडीएन सिंह	डी-33, वीणा निवास, पीपुल्स कोऑपरेटिव कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना	श्रम अधीक्षक
9	अमरेन्द्र कुमार गोंड			रोहतास	बिहार शिक्षा सेवा

पढ़ने से सस्ता कोई मनोरंजन नहीं और न कोई इससे बड़ा खुशी का खजाना।
-लेडी मौटेंग्य

वर्ष 2010-11 के सफल विद्यार्थियों की सूची

छात्र का नाम	उत्तीर्ण	प्रशिक्षण का वर्ष	पता
धर्मेन्द्र कुमार	Bank of India (Clerk)	2010	ग्राम+पो-गो आवा शेखपुरा, वार्ड-5, जिला-पटना
ज्ञानचंद रविदास	Bank of India (Clerk)	2010	ग्राम-मखदुमपुर, पो-गुरुशरण पुर, जिला-नालंदा
प्रदीप कुमार दास	Central Bank of India, Chennai (P.O.)	2009	पिता-श्री वृजनंदन रविदास, ग्राम-मखदुमपुर, पो.-गुरुशरणपुर, जिला-नालंदा
ओमप्रकाश	Central Bank of India, (P.O.)	2010	पिता-परमेश्वर दास, रानीपुर, पो-तेजबिगहा, जिला-जहानाबाद
मंजू लता	Bank of India (Clerk)	2010	पिता-श्री भगवान मांझी, ग्राम-पलंगा, पो.-सुईथा, जिला-पटना
मंजू कुमार	10+2 Teacher Biharsharif	2010	स्व.चन्द्र मोहन, काजीपुर लेन, नयाटोला, पो.-बांकीपुर, पटना

ग्रुप-बी, असिस्टेंट कमांडेंट-2009 (सेंट्रल पुलिस फोर्स)

क्र.	छात्र का नाम	उत्तीर्ण	प्रशिक्षण का वर्ष	पता
1	रंजन प्रकाश	Assistant Commandant 09097804213	2009	ग्राम+पो-तरारी, वाया-दाउदनगर, जिला-औरंगाबाद
2	प्रभात कुमार	Assistant Commandant 09905403886	2009	श्री रामाशीष कुमार, ग्राम-जमीदपुर, पो-पुनपुन, जिला-पटना
3	अमित कुमार सिंह	Assistant Commandant 9835488478	2009	भाघी काठी लेन, महेंद्रू, पटना
4	दयानंद शर्मा	Assistant Commandant 09835498469	2009	श्री कुलेश शर्मा, रोड नं. 8 मकान नं. 4, इंद्रपुरी, पटना
5	विकास कुमार	Assistant Commandant 9835488478	2009	स्व.महेंद्र प्रसाद साह, ग्राम-विक्रमपुर, पो-कजरा, जिला-लखीसराय
6	दीपक कुमार यादव	Assistant Commandant 9852656952	2009	श्री सिद्देश्वर प्रसाद सिंह, ए/369, एजी कॉलोनी, पो-आशियाना नगर, पटना

श्रेष्ठ व्यक्ति कभी नहीं मर सकता।-कैली माकस

वर्ष 2007-08 के सफल विद्यार्थियों की सूची

क्र.	छात्रा का नाम	उत्तीर्ण	प्रशिक्षण का वर्ष	पता
1	संतोष कुमार पासवान	Asst. Commandant Central Police Force	2007	पिता-श्री राजकुमार पासवान, ग्राम-मठगुलनी, जिला-नवादा
2	रंजू कुमारी	CDPO 2007	2007	श्री रामवरण राम, आलमगंज चौकी, बागभूप सिंह लेन, पटना-7
3	रेखा कुमारी	Programme Officer DRDA	2007	पिता-श्री जगदीश दास, डी. 172 पीपुल्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800020
4	सरफराज आलम	Lecturer (Math) Maulana Azad Eng. College, Patna	2007	पिता-स्व.एहिया, ग्राम-नोनियार टोला, पो+थाना-बेतिया, जिला-पश्चिमी चम्पारण
5	रणजीत कुमार सिंह	I.A.S. Finally Selected	2007-2008	पिता-श्री रामटहल सिंह ग्राम-फटिकवारा, पो-देशरी, वैशाली

बिहार न्यायिक सेवा के लिए चयनित
Bihar Judicial Service-2006-2007

Sl.	Name of Candidate	Place	Contact No.
1	Sri Anil Kr. Ram	Bhojpur, Ara	9939086898
2	Sri Sunil Kr.	Bajipur	9304847245
3	Sri Rajeev Nayan	Hajipur	----------
4	Sri Anand Abhisek	Bhojpur, Ara	9470247436 (M)
5	Sri Rajeev Kumar	Jahanabad	----------
6	Miss Sangita Rani	Muzaffarpur	9850015069
7	Sri Deepak Kumar	Gaya	9334086015
8	Sri Deepak Kumar	Begusarai	----------

आदतों को यदि रोका न जाए तो शीघ्र ही लत बन जाती है।
-संत आगस्तिन

9	Sri Shashi Bhusan Kr.	Biharsharif	9835610632
10	Sri Samrendra Gandhi	Samastipur	9835407527
11	Jitendra Kumar	Sasaram	9771198818
12	Rajnit Kumar	Muzaffarpur	
13	Mithilesh Kumar	Nawada	
14	Amit Kumar	Patna, Barh	9835438914

वर्ष 2005-06 के सफल विद्यार्थियों की सूची

क्र.	छात्र का नाम	उत्तीर्ण		प्रशिक्षण का वर्ष	पता
1	दीपक आनन्द	I.A.S. Finally Secected 2007		2004-05	पिता-श्री पदम चौधरी, चौधरी भवन, ग्राम-कोट बाजार, जिला-सीतामढ़ी
2	नयन प्रकाश	Deputy Collector		2005	पिता-श्री फागू राम ग्राम+पो-जीरादेई, जिला-सिवान
3	प्रमोद चौधरी	PO SBI		2005	ग्राम+पो-बख्तियारपुर, पटना
4	रूपेश कुमार सुमन	Section Engineer Railway		2005	ग्राम-हरि बलमा, पो-पंचलखी वाया-हथुआ, जिला-सीवान
5	ज्ञानती कुमारी गोंड	Commercial Clerk		2005	पिता-श्री छोटे लाल गोंड अशोक नगर, रोड -08 कंकड़बाग-पटना-20
6	अनीता कुमारी	NET		2005	ग्राम-बिलौनी, पो.-मोकामा घाट, जिला-पटना
7	शशि भूषण सिंह	Project Economist (DRDA) Govt. of Bihar		2005	पिता-श्री उमाशंकर प्रसाद खलासी मुहल्ला, बक्सर
8	संतोष कुमार भारती	10+2 Teacher High School Teacher		2005	पिता-श्री वशिष्ठ राम ग्राम+पो-एकुरी, जिला-पटना

यदि तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरू करो। -साइरस

9	नवीन कुमार निश्चल	Project Economist (DRDA) Govt. of Bihar		2005	श्री रामबाबू राय, ग्रा-लक्ष्मनिया, पो-किसनपुर, जिला-सुपौल
10	नुरूल ऐन	Deputy Collector		2005	पिता-दाउद, ग्राम-ईदगाह टोला, पो-बगहा, जिला-प.चंपारण
11	ओम प्रकाश	P.O. (Bank of Baroda)		2006	पिता-श्री लोक प्रकाश सिन्हा, ग्राम-गेरुअरी, पो-सवाना, बख्तियारपुर, पटना
12	मो. अनवारूल हक	UPSC, P.T. 2007		2006	पिता-मो.एनुल हक ग्राम+पो-रसौंक, खगड़िया
13	राजीव कुमार	P.O. Dena Bank		2006	झाउगंज, पटना सीटी, पटना
14	मो.अकमल खुर्शीद	Asst. Commandant		2006	पिता-मो. हसीबुर्रहमान अजीमाबाद, पो-महेंद्रू, पटना-6
15	सुनील कुमार	Asst. DRDA Govt. of Bihar		2006	पिता-श्री जोगेन्दर पासवान ग्राम-रामपुर उगन, पो-मोतीपुर, जिला-मुजफ्फरपुर

वर्ष 2004-05 के सफल प्रशिक्षणार्थियों की सूची

क्र.	नाम	पद
1	अयोध्या प्रसाद	शिक्षक सहायक श्रम निरीक्षक
2	ओम प्रकाश मांझी	आपूर्ति निरीक्षक
3	रामायण पासवान	पीजीटी नवोदय
4	विजय कुमार	एफसीआई
5	शिव प्रसाद राम	शिक्षक
6	हेमंत कुमार	पत्रकार हिन्दुस्तान
7	अशोक कुमार	सहायक
8	भगवान राम	एई
9	रविन्दनाथ प्रसाद	एईपीडब्ल्यूडी
10	प्रेमचंद मांझी	इंजीनियर जीपीडी
11	आनंद मोहन निराला	शिक्षक

इच्छाशक्ति, साहस और उद्यम से कुछ भी पाया जा सकता है।
-रमाशंकर आर्य

12	विजय कुमार	स्वास्थ्य विभाग
13	प्रवीण कुमार	सीओ, हाजीपुर
14	श्याम बिहारी	शिक्षक
15	जय बहादुर राम	शिक्षक
16	इंदल पासवान	सहायक, आईजीआईएमएस, वर्ष 2000
17	विनोद कुमार	अभियंता, 1993
18	मनोज कुमार	डॉक्टर, 1993
19	विनोद कुमार	एकाउंटेंट, सीडीए, 1995
20	शंभू प्रसाद	शिक्षक, 1995
21	विन्देश्वरी प्रसाद	शिक्षक, 1996
22	रामशीष पासवान	पुलिस इंस्पेक्टर , 1994
23	लक्ष्मण पासवान	अधिवक्ता, पटना हाईकोर्ट , 1994
24	राधेश्याम सुमन	शिक्षक, 1994 लखनऊ
25	राम अवध पासवान	शिक्षक, 1994 दिल्ली
26	मनोज विभाकर	सहायक, पटना विश्वविद्यालय, 1997
27	पवन कुमार सुमन	अभियंता, 2000
28	नंदलाल पासवान	व्याख्याता, मिथिला विश्वविद्यालय
29	गोरख राय	रेंजर, वन विभाग
30	डॉ. प्रमांसी जयदेव	व्याख्याता, मिथिला विश्वविद्यालय
31	राजेन्द्र प्रसाद भारती	स्टील प्लांट, राउरकेला
32	इंजीनियर विनोद चौधरी	पीडब्ल्यूडी
33	प्रमोद चौधरी	प्रोबेशनरी ऑफिसर, एसबीआई
34	दिवाकर प्रसाद	व्याख्याता इतिहास, भागलपुर विश्वविद्यालय
35	राजकुमार	व्याख्याता राजनीति विज्ञान, भागलपुर विश्वविद्यालय
36	एकलव्य कुमार ज्योति	रेलवे सेवा, मुगलसराय
37	राजकिशोर लाल	उप समाहर्ता, 42वां बैच
38	ब्रजकिशोर लाल	उप समाहर्ता, 45वां बैच
39	दिनेश कुमार	राजस्थान मेवाड़ विवि में सिविल इंजीनियरिंग में प्रवेश
40	आशना आनंद	जामिया मिलिया विवि में सिविल इंजीनियरिंग में प्रवेश

जिसमें तुम्हारी आंतरिक रुचि है, उसी में लगे रहो। अपनी बुद्धि के मार्ग को मत छोड़ो। -प्रकृति

वर्ष 2003-04 के सफल प्रशिक्षणार्थियों की सूची

क्र.	नाम	पद
1	मुंशी प्रसाद	88 बैच, डीओ बीमा कम्पनी
2	वृज बिहारी राम	88 बैच, प्राथमिक शिक्षक
3	जीउत राम	88 बैच, नवोदय विद्यालय
4	राजेंद्र प्रसाद	88 बैच, पुलिस इंस्पेक्टर
5	नंदलाल प्रसाद	88 बैच, सहकारिता प्रसार पदाधिकारी
6	परमा राम	88 बैच, स्कूल इंस्पेक्टर
7	भरत राम	88 बैच, शिक्षक
8	महेश्वर पासवान	88 बैच, शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय
9	फूलो पासवान	88 बैच, व्याख्याता, पटना विवि
10	बलिस्टर प्रसाद	88 बैच, वरीय अंकेक्षण पदाधिकारी
11	परमानन्द प्रसाद	88 बैच, श्रमनिरीक्षक पदाधिकारी
12	प्रेम कुमार	88 बैच, रेलवे, सहायक
13	रामप्रवेश दास	88 बैच, एपीपी
14	गोरख हरिजन	88 बैच, वयस्क शिक्षा
15	शशांक शिवशेखर प्रसाद	89 बैच, शिक्षक
16	सुरेंद्र राम	89 बैच, स्कूल इंस्पेक्टर
17	रामाशीष राम	89 बैच, सहकारिता प्रसार पदाधिकारी
18	राजाराम प्रसाद	89 बैच, पुलिस इंस्पेक्टर
19	भोला पासवान	89 बैच, शिक्षक
20	सुदर्शन कुमार	89 बैच, स्टेशन मास्टर
21	राम पदारथ पासवान	89 बैच, नवोदय शिक्षक
22	चन्द्रशेखर आजाद	89 बैच, श्रम पदाधिकारी
23	विनोद कुमार ब्रह्मचारी	89 बैच, केन्द्रीय विद्यालय शिक्षक

मन की एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है।
-चार्ल्स बक्सटन

24	हरसुराम	सीआरपीएफ
25	ललन प्रसाद	उपसमाहर्ता
26	कामता राम	सहायक, रेलवे
27	तेजपति राम	शिक्षक केन्द्रीय विद्यालय
28	लाल बहादुर राम	स्टेशन मास्टर
29	विक्रम चौधरी	पुलिस अवर निरीक्षक
30	अशोक कुमार	एसडीओ, टेलीफोन
31	सुधीर कुमार	सहायक अभियंता, सिंचाई
32	सत्येंद्र कुमार	सहायक, पशुपालन
33	अजय कुमार ज्वाला	शिक्षक
34	संजय कुमार	श्रम निरीक्षक
35	रत्नेश्वर कुमार	सहायक

वर्ष 2001-02 के सफल प्रशिक्षणार्थियों की सूची

क्र.	नाम	पद
1	इष्टदेव महादेव	बिहार प्रशासनिक सेवा (44वीं बीपीएससी)
2	इन्दू कुमारी	(क) पहली नियुक्ति-सीडीपीओ (ख) द्वितीय नियुक्ति बिप्रसे (44वीं बीपीएससी)
3	संजय कुमार	पंजाब नेशनल बैंक, गया
4	नंद किशोर रजक	बिहार वित्त सेवा (40वीं बीपीएससी)
5	ओम प्रकाश मांझी	बिहार कारा सेवा (39वीं बीपीएससी)
6	शैलेन्द्र नाथ	बिहार प्रशासनिक सेवा
7	राम विनय पासवान	बिहार शिक्षा सेवा
8	डॉ. ओम प्रकाश	(क) पहली - व्याख्याता, मगध विश्वविद्यालय (ख) दूसरी - स्वास्थ्य प्रशिक्षण (ग) तीसरी - बिहार शिक्षा सेवा (44वीं बीपीएससी)
9	लखेन्द्र पासवान	बिहार प्रशासनिक सेवा (45वीं बीपीएससी)

जिस समय क्रोध उत्पन्न होने वाला हो, उस समय उसके परिणामों पर विचार करो, क्रोध शिथिल पड़ जाएगा। -कन्फ्यूशियस

10	अविनाश गांधी	सहायक आयुक्त (कर्मचारी भविष्य निधि)
11	विश्वनाथ चौधरी	उप समाहर्ता
12	अनूप लाल मंडल	एसओ, उच्च न्यायालय, पटना
13	संजीव राय	असिस्टेंट कलक्टर (कस्टम)
14	विश्वीत हेनरी	उप समाहर्ता (बीपीएससी 1988)
15	शैलेश कुमार चौधरी	डीपीओ हाजीपुर
16	आदित्य नारायण	उपसमाहर्ता
17	शीला ईरानी	(क) सीडीपीओ (1994) (ख) डीएसपी (यातायात)
18	पारस कुमार चौधरी	सेल
19	आशीष कुमार	दामोदर वैली कॉरपोरेशन
20	सीमा कुमारी चौधरी	सेल (लेबर ऑफिसर)
21	बजरंगी प्रसाद	सहायक वाणिज्य कर आयुक्त, गया
22	सुरेन्द्र कुमार	सहायक, स्नातकोत्तर, रसायनशास्त्र विभाग, पटना विवि.
23	उदय प्रताप	उप समाहर्ता 38वीं
24	राहुल वर्मन	उप समाहर्ता 42वीं
25	अरविन्द कुमार	सहायक स्टेशन मास्टर
26	चन्द्रशेखर आजाद	रेलवे
27	गंगाराम	नवोदय
28	दिनेश कुमार आर्य	रेलवे
29	ओम प्रकाश	रेलवे (डीआरएम) धनबाद
30	डॉ. केदार हरिजन	व्याख्याता, जेपी विवि छपरा
31	मधुसूदन पासवान	बिहार शिक्षा सेवा
32	रामाज्ञा कुमार	अभियंता (कार्यपालक)
33	ददन प्रसाद	88 बैच, इंस्पेक्टर स्वास्थ्य विभाग
34	सुरेश चौधरी	88 बैच, बिहार शिक्षा सेवा
35	कन्हैया राय	88 बैच, वित्त पदाधिकारी

जो अपना कर्तव्य करने से चूकता है, वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है। -थियोडोर पार्कर

Faculty Members for Banking & Railway

क्र.	नाम	पद
1	डॉ. राज राजेश	नया टोला, पटना
2.	डॉ. सुजीत कुमार (ए)	बंगाली अखाड़ा, मछुआ टोली, पटना
3.	श्री सुजीत कुमार (बी)	पश्चिमी पटना
4.	डॉ. आरके सिंह	महेंद्रू, पटना
5.	डॉ. सतीश कुमार	कंकड़बाग, पटना
6.	श्रीमती कविता जैन	डॉन बॉस्को, पटना
7.	श्री सुधीर कुमार	आलमगंज चौकी, पटना
8.	सुश्री नीमा कुमारी	पश्चिमी पटना
9.	श्री दीपंकर दास	देवारून अपार्टमेंट, भिखना पहाड़ी, पटना
10.	श्री अजय रंजन	महेंद्रू, पटना
11.	डॉ. धनंजय यादव	पीरबहोर थाना के निकट, पटना
12.	श्री वीके सिन्हा	कंकड़बाग, पटना
13.	डॉ. अनिल कुमार सिंह	एनएमसीएच, सेवानिवृत्त, पटना
14.	डॉ. एचएन सिंह	गोपाल मार्केट, नया टोला, पटना

Faculty Members for Judicial Services

क्र.	नाम	पद
1	डॉ. मोहम्मद शरीफ	स्नातकोत्तर विधि विभाग, पटना लॉ कॉलेज, पटना
2.	डॉ. वामी भूषण	पटना लॉ कॉलेज, पटना
3.	डॉ. सलीम जावेद	पटना लॉ कॉलेज, पटना
4.	डॉ. विश्वशंकर सिंह	पटना लॉ कॉलेज, पटना
5.	डॉ. वीरेंद्र कुमार गुप्ता	पटना लॉ कॉलेज, पटना
6.	डॉ. वाईके शर्मा	पटना लॉ कॉलेज, पटना

जिस प्रकार श्रम शरीर को शक्ति प्रदान करता है, उसी प्रकार कठिनाइयां मनुष्य को शक्ति संपन्न बनाती हैं।-सेनेका

7.	डॉ. संजय कुमार	द अकादमी, अशोक राजपथ, पटना
8.	डॉ. सुनील कुमार	द अकादमी, अशोक राजपथ, पटना
9.	डॉ. श्री शशि रंजन	मुसल्लहपुर, पटना
10.	डॉ. सत्येन्द्र सिंह	पटना लॉ कॉलेज, पटना
11.	मु. कमालुद्दीन खां	वीर कुं वर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
12.	श्री अहिभूषण प्रसाद सिंह	मुसल्लहपुर हाट, पटना
13.	डॉ. सुभाष चन्द्र राय	बिहार इन्स्टीट्यूट ऑफ लॉ
14.	डॉ. संजीव कुमार सिन्हा	पटना लॉ कॉलेज

Faculty Members for Medical & Engineering

क्र.	नाम	पद
1.	डॉ. आरएन शुक्ला	रसायन शास्त्र विभाग, बीएन कॉलेज, पटना
2.	डॉ. मकेश्वर प्रसाद	रसायन शास्त्र विभाग, सायंस कॉलेज, पटना
3.	डॉ. अमरेन्द्र नारायण	भौतिक शास्त्र, डीएन कॉलेज, पटना
4.	डॉ. अरविन्द प्रसाद	भौतिक शास्त्र, डीएन कॉलेज, पटना
5.	डॉ. संजीव कुमार झा	गणित विभाग, बीएन कॉलेज, पटना
6.	श्री अमरेश रंजन	गणित विभाग
7.	डॉ. चुनचुन पाठक	गणित विभाग, राजाराम मोहन राय सेमिनरी, पटना
8.	डॉ. एसबी राय	गणित विभाग, बीएन कॉलेज, पटना
9.	डॉ. बिनोद प्रसाद	वनस्पति विज्ञान, बीएन कॉलेज, पटना
10.	डॉ. ए आनंद राही	वनस्पति विज्ञान
11.	डॉ. राज कुमार सिंह	जन्तु विज्ञान
12.	डॉ. एपी लाल	जन्तु विज्ञान, बीएन कॉलेज, पटना

केवल कर्महीन ही ऐसे हैं जो भाग्य को कोसते हैं और जिनके पास शिकायतों का बाहुल्य हुआ करता है।-जवाहर लाल नेहरू

List of Faculty Member (UPSC and BPSC)

Sl.	Name	Address
1	Dr. SS Prasad	Rtd. Prof. of English, PG, PU
2	Dr. Bharti S Kumar	P.G. Deptt. of History, PU
3	Dr. SN Arya	Reader, MU
4	Dr. EA Arshad	Prof. of Urdu, PU
5	Dr. PN Tiwari	History, Patna College, PU
6	Dr. RK Lal	Rtd. Prof. of Political Science, PU
7	Dr. D Prasad	Rtd. Prof. of Chemistry, PU
8	Dr. JN Prasad	Economics, M.M. College, PU
9	Dr. Karmendu Shishir	Hindi, MU, BD College
10	Dr. M Rahman	History, Gopal Market, Patna
11	Dr. RK Sinha	P.G. Deptt. of Zoology, PU
12	Dr. T Mukerjee	Philosophy, AN College
13	Dr. MM Mehra	Rtd. Prof. of PA, PU
14	Dr. RM Singh	Deptt. of English, BN College, PU
15	Dr. BP Singh	Prof. of Economics, PU
16	Dr. Satish Kumar	Kankarbagh, Patna
17	Dr. RK Rohatagi	PG Deptt. of Geography, PU
18	Dr. K Mirza	Prof.. of Pol. Sc., PU
19	Dr. NK Jha	Deptt. of Commerce, PU
20	Dr. RS Arya	PG Deptt. of Philosophy, PU
21	Dr. RN Sharma	Sociology, PU
22	Dr. A Das Gupta	PG Deptt. of Sociology, PU
23	Dr. KN Paswan	PG Deptt. of Geography, PU
24	Dr. NP Tiwari	PG Deptt. of Philosophy, PU
25	Dr. RRP Singh	PG Deptt. of Chemistry, PU
26	Dr. Binay Soren	PG Deptt. of Political Science, PU
27	Dr. Seema Prasad	PG Deptt. of Political Science, PU
28	Dr. BN Tiwari	Deptt. of Botany, PU
29	Dr. Balram Tiwari	Hindi, PU
30	Dr. Shashi Aryan	Musallahpur Hat, Patna
31	Dr. MK Mallik	Jagdevpath, Patna

मैं संपूर्ण ज्ञान को अपना प्रदेश मानता हूं।
-बेकन

बीपीएससी 63वीं 2017-18 में प्रशिक्षण ले रहे छात्र

क्र.	नाम	पिता/अभिभावक का नाम	स्थायी पता एवं मोबाइल नंबर	कोटि	योग्यता
01	VIKASH KUMAR	SATYA PRAKSH SAFI	JAYNAGAR KACHAHARI TOLI P.O- JAYNAGAR MOB.- 9162832062	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
02	MUKUND KUMAR	RAMJEE CHAUDHARY	VILL+P.O- DIAWAN P.S- KARAY PARSURAY NALNADA MOB.- 9162832062	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
03	CHANDRA SHEKHAR	RAMASHISH MAHTO	VILL.- DUBARBANNAAO P.O.- KISHANPUR DIST.- SAMSATIPUR MOB.- 75448354774	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
04	KUMARI RANJANA BHARTI	GUDDAR RAM	VILL - POST BHITAHA NIZAMAT VIA BETTIAH MOB:- 9708449391	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
05	RAHUL KUMAR	SUBELAL KUMAR	VILL.- KAJICHAK, P.O.- KHAJURAR, DIST.- PATNA MOB.- 9470045655	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
06	RAKESH RANJAN	DEODATTA MANDAL	AT- DERWEPATTI, P.O- SUPAHA, P.S.- KATORIA DIST.- BANKA MOB.- 7295949493	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
07	MUKALESH KUMAR RAM	RAM ISHWAR RAM	VILL.- AKBARPUR P.O- SITALPU P.S- DARIYAPUR DIST. SARAN MOB.- 7277830091	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
08	BABLU KUMAR PASWAN	RAMDAYAL PASWAN	BIRPUR KOTHI P.O.- BIRPUR DIST:- MADHUBANI MOB:- 8271089246	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
09	ABHAY KUMAR BHASKAR	KAMTA PRASAD AZAD	AT- BHAISANTIOUA P.O-BEGAMPUR P.S- MAUSALAMI PATNA CITY,PATNA MOB.- 09386083605	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
10	MURARI SHANKAR	SAHDEV PASWAN	SIPARA MATHKHAM P.O.- DHELWAN P.S.- BEUR PATNA MOB.-9507826380	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
11	KUNAL KISHORE	JANKI PRASAD	VILL.- PREMDIHA P.O.- MOHADDINAGAR P.S.- HALSI, DIST- LAKHISRAI MOB.- 9534413172	SCHEDULED CASTE	GRADUATE

12	HARENDRA KUMAR	DASO PASWAN	VILL.- TURKBAN P.O.+P.S.- DHAMAVL NAWADA MOB.- 7079753648	SCHEDULED CASTE	GRADU
13	RAVI CHOUDHARY	RAM CHANDRA CHOUDHARY	SADIKPUR NEAR MADRSA SCHOOL GULZARBAGH MOB.:-9386791548	SCHEDULED CASTE	GRADU
14	RAVI KUMAR	HARENDRA RAM	VILL.+P.O- AAMI P.S- DIGHWARA DIST.- SARAN MOB :- 9097656946	SCHEDULED CASTE	GRADUA
15	CHANDAN PASWAN	HIRAMAN PASWAN	VILL- THORASAN P.S.- KARAHGAR P.O- TORANI DIST- ROHTAS MOB.- 8294741514	SCHEDULED CASTE	GRADUA
16	SINTU KUMAR	BIRJU RAVI DAS	VILL.- MIRZAPUR P.O- MIRZAPUR HUSAINCHACK DIST - NAWADA MOB.- 9534350525	SCHEDULED CASTE	GRADUA
17	ATUL ANAND	MAHENDRA PASWAN	VILL.- SAMMSPUR P.O.- FATUHA, PATNA MOB.-7669594950	SCHEDULED CASTE	GRADUA
18	VIKASH KUMAR	DINESH RAVIDAS	VILL.- SALAIYA KHURD P.O.-FATEHPUR P.S.- FATEHPUR GAYA MOB. - 9939246237	SCHEDULED CASTE	GRADUA
19	OM PRAKASH	BIGAN RAM RAM	VILL.- GOVINDAPUR DIST+P.O+P.S- ROHTAS, BIHAR MOB.- 9523871668	SCHEDULED CASTE	GRADUA
20	RAHUL KUMAR	DHIRENDRA PD PASWAN	VILL.- HAFLAGANJ P.O.-SIRNIA P.S.- M KATIHHR MOB.- 7631186464	SCHEDULED CASTE	GRADUA
21	RAVISHANKAR KUMAR	SUKHU RAVIDAS	VILL.- DHANKI PAR P.O.- KEORA P.S.- PUNPUN PATNA MOB.- 8677094910	SCHEDULED CASTE	GRADUAT
22	VEENA KUMARI	SITARAM DAS	VILL.+P.O.- KATHOUN P.S.-RAJOON DIS- BANKA, BIHAR MOB.- 9546389973	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
23	CHANDJYOTI	CHANDRAKET PASWAN	VILL.+P.O- SAHDULLAPUR DIST- VAISHALI BIHAR MOB.- 7070559524	SCHEDULED CASTE	GRADUATE

24	ABHITESH RAJ	SUJENDRA PASWAN	VILL.- SAMASTI P.O- MURAURA P.S- DEEPNAGAR MOB.- 7903253367	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
25	JYOTI KUMARI	RAMANAND RAVIDAS	VILL.- SONA GOPALPUR P.S.- GOPALPUR DIST- PATNA , BIHAR MOB.- 7322950239	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
26	KUMARI PUNAM	VISWAJIT PASWAN	VILL.- GAURI, P.O.- RAISA, P.S.- CHANDI , DIST- BIHAR SARIF MOB.- 9431216989	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
27	KAVITA KUMARI	RAM CHANDRA RAM	AT.- BIKRAMPUR P.O- SARANGPUR P.S- TAJPUR DIST.- SAMSTIPUR MOB.- 7352274667	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
28	KAMINI KUMARI	RAM AWATAR PRASAD	VILL.- BABHANDIH P.O.- CHITAUKHAR P.S.- NASRIGANJ DIST.- ROHTAS MOB.- 7325059494	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
29	NIDHI PRIYA	DHIRENDRA KUMAR	VILL- BARHIY P.S.- SARMERA DIST.- NALNADA MOB.- 8540004250	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
30	KRISHNDEO KUMAR	RAMADHAR PRASAD	VILL.+P.O.- FAKHARPUR P.S.- ARWAL	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
31	NIKKI KUMAR	RAMASHISH MANJHI	VILL-JALA P.O- DARDIJALA P.S- SANGRAMPUR DIST- MUNGER MOB.- 9534753082	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
32	VIKASH KUMAR	VINOD KUMAR PRABHAKAR	MAJIDPUR P.O- ITTURA P.S.-MANPUR DIST- NALANDA MOB.- 9113714751	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
33	RAJANI KUMARI	RAM NARAYAN PASWAN	CHITRAKUT NAGAR ROAD NO. 07 TAKIYAPUR PATNA MOB.- 7903229053	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
34	NIKITA KUMARI	DILIP KUMAR RAJAK	NEAR-L.I.G-1 CO-OPERATIVE COLONY ASHOK NAGAR PATNA MOB.- 8507036868	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
35	PUJA KUMARI	AMIT KUMAR CHAUDHARY	VILL.- SAIDPUR ZAHID, P.S.- UJIARPUR P.O- RUPAULI DIST.- SAMASTIPUR MOB.- 9529941710	SCHEDULED CASTE	GRADUATE

36	SUMAN KUMAR	JWAHAR RAM	VILL.- PAILA DIH, P.O.- ASHAPADRI, P.S- SIMRI DIST.- BUXAR MOB.- 8083163450	SCHEDULED CASTE	GRADU
37	PRITAM KUMAR	GAURAV KUMAR KESHARI	AT+PO- RIFATPUR P.S.- PIRPAINTI DIST.- BHAGALPUR MOB.- 9534160027	SCHEDULED CASTE	GRADU
38	LAKSHAMAN KUMAR	KALESHWAR PASWAN	VILL.+P.O.- PESHAUR P.S.- RAHUI DIST.- NALANDA MOB.- 9470092254	SCHEDULED CASTE	GRADU
39	ANSHU KUMARI	VINOD RAM	DIGMA RAJEEV NAGAR ROAD - NO.23L, PATNA MOB. - 7488479605	SCHEDULED CASTE	GRADU
40	ANISH KUMAR	ASHOK KUMAR	VILL.- ROHUA(KHURD) P.O.+P.S- DURGAWATI DIST- KAIMUR MOB.- 7250904846	SCHEDULED CASTE	GRADU
41	BIBHA KUMARI	LAL BAHADUR RAJAK	C/O.- LAL BAHADUR RAJAK SDO BSNL MO.- KOHIRI TOLA, BETTIAM WEST CHAMPARAN MOB.- 9097482715	SCHEDULED CASTE	GRADU
42	RAVI ROUSHAN KUMAR	SHREE KANT CHOUDHARY	VILL.- GAURI, P.O- RAISA P.S.- CHANDI DIST.- NALANDA MOB.- 8051280824	SCHEDULED CASTE	GRADU
43	NARSINGH KUMAR DAS	RAM CHARITRA DAS	VILL- BADAHPUR, P.O- BHORE, P.S.- MOFASIL GAYA MOB.- 9431239906	SCHEDULED CASTE	GRADU
44	MANU KUMARI	RAMLAL RAM	VILL+P.O.- KAITHI P.S.- SONHAN DIST- KAIMUR MOB.- 8936080473	SCHEDULED CASTE	GRADU
45	ABHISHEK DAS	RAMBRIKSH DAS	VILL.-TILAIYA P.O+P.S-RAJAVLI DIST.- NAWADA MOB.- 7764878033	SCHEDULED CASTE	GRADU
46	KAUSHAL KUMAR	NAWAL KISHOR PASWAN	AT+P.O- CHAKMAKA P.S- JANKINAGAR DIST- PURNEA MOB.- 9534712783	SCHEDULED CASTE	GRADU
47	DEWENDAR KUMAR	BABU RAM	VILL.- SURAR P.O- PIROUNTA P.S.- NAVINAGAR DIST- AURNGABAD BIHAR MOB.- 9801189309	SCHEDULED CASTE	GRAD

48	RAJEEV KUMAR	RAMESHWAR RAM	AT-SRIPUR KHAS P.O+P.S- GHORASAHAN DIST- EAST CHAMPARAN MOB.- 7903276800	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
49	SARASWATI KUMARI	BHAGWAN PASWAN	VILL.- GANGAPRASAD P.O.- AMARPUR DIST.- BEGUSARAI, MOB.- 9122875850, 9162586442	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
50	BANKAT KUMAR RAMAN	BIDYANAND DAS	VILL.- BHAJANAHA P.O- BASANIA DIST.- MADHUBANI MOB.- 83404400480	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
51	SIDDHARTH GAUTAM BHARTI	JIVACHH DAS	AT. BHAJNAHA P.O - BASANIA P.S.- LAUKAHA MADHUBANI MOB.- 8540983991	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
52	DIWESH NANDAN TANTI	RAMBALI TANTI	AT.- PATAUNA POST- MALLEHPUR DIST- JAMUI MOB.- 7654006632	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
53	BRAJMOHAN TANTI	NEPALEE TANTI	AT- PATOUNA, POST- MALAYPUR, DIST- JAMUI MOB.- 7903313851	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
54	RAHUL KUMAR	SHANKAR TANTI	VILL- HARNI P.O- KHALARI P.S.- KHAIRA DIST- JAMUI MOB.- 8862881396	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
55	ANUJ KUMAR TANTI	DAROGI TANTI	AT+P.O- DABIJ P.S- KHAIRA DIST- JAMUI MOB.- 9199603572	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
56	PRADEEP KUMAR	YAMUNA RAM	AT.P.O-CHAUBEYTOLA P.S.- CHANPATIA BETTIAH MOB. - 7321993308	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
57	ANOOP KUMAR	SHIV JI	AT- NAWALPUR KFTOLA P.O- KOTHUA, DIST.- SIWAN MOB.- 9576089166	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
58	ANUJ KUMAR NIRALA	BHOLA RAM	VILL+P.O+P.S - MUSHAHRI DIST- MUZAFFARPUR MOB.- 9525320657	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
59	RAJENDRA KUMAR CHOUDHARY	BASNT KUMAR CHOUDHARY	VILL+P.O.- PARBAL PUR DIST.- NALNADA MOB.- 9570365695	SCHEDULED CASTE	GRADUATE
60	RAJEEV KUMAR RANJAN	RAM SAWRUP BHARTI	GAWHOSTEL ARFABAD MANENDRU, PATNA -6 MOB.-	SCHEDULED CASTE	GRADUATE

प्रतियोगिता परीक्षाओं में उत्तर लिखने के क्रम में कुछ महत्वपूर्ण बातों पर गंभीरता पूर्वक ध्यान रखें

भाषा सरल हो एवं किताबी शैली का प्रयोग न करें

लंबे-लंबे वाक्यों का प्रयोग न करें

एक संपूर्ण उत्तर 600-700 शब्दों में लिखने की कोशिश करें

टिप्पणी लिखने के क्रम में शब्द सीमा का निर्देशानुसार पालन करें, अगर कहा जाए कि लगभग 200 शब्दों में लिखें तो आप 10-15 शब्द कम या ज्यादा लिख सकते हैं। लेकिन अगर निर्देश रहे कि 200 शब्दों से अधिक नहीं रहे तो सदैव ध्यान रखें कि किसी भी हालत में शब्द सीमा 200 से ज्यादा न हो। अगर कुछ कम रहे तो कोई हर्ज नहीं

आपका उत्तर तथ्यपरक होना चाहिए, साथ ही अवधारणा एकदम अस्पष्ट हो, इसका मतलब यह है कि आधुनिक एप्रोच को ध्यान में रखते हुए उत्तर लिखें

उत्तर पूर्णतः प्रश्न के अनुरूप हो, सीधे शब्दों में टू द प्वाइंट ही लिखें

उत्तर लिखने के क्रम में इतिहासका के कथनों का प्रयोग सिर्फ विवादास मामलों में ही करें और उसी धारणा अपनाएं जो आधुनिक दृष्टिकोण के अनुरूप हो

उत्तर हमेशा तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक होना चाहिए। यानी उत्तर लिखने के क्रम में उस प्रश्न से संबंधित सभी मान्य पहलुओं की विवेचना करनी चाहिए

निष्कर्ष पर विशेष ध्यान दें। 50-60 शब्दों का निष्कर्ष हो, जिसमें उस प्र से संबंधित धारणा सर्वाधिक मान्य उसे स्वीकार किया जाना चाहिए

सभी प्रश्नों के उत्तर यथासंभव संतुलित लिखने का प्रयास करें

आपके प्रश्नोत्तरों में तार्किकता और बौद्धिकता का पुट भी परिलक्षित होना चाहिए

परीक्षा में समय प्रबंधन पर विशेष ध्य देना चाहिए, प्रश्नों के आधार पर उन लिए समय निर्धारित कर लेना चाहिए

Will to Learn and Compete..

Each and every step taken by you, will decide your futur

- Fix your Aim
- Properly plan
- Start early
- Keep serious approach
- Maintain punctuality
- Identify your weak point
- Choose quality material
- Keep honest approach
- Frequently test yourself
- Consult your teachers & wise friend

हिन्दुओं में प्रचलित कतिपय निष्ठुर प्रथाएं

हिन्दू जाति की तथाकथित सभ्यता पर विचार करते हुए मैं अपने पाठकों का ध्यान इस जाति में 11 वीं शताब्दी के मध्य से आज तक धर्म के नाम से प्रचलित उन विविध क्रूर तथा असभ्य कुप्रथाओं की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं जो इस जाति के सभ्य होने में ही संदेह उत्पन्न कर देती है तथा जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने कानून द्वारा बंद कर इस जाति का महा उपकार किया है।

-रमाशंकर आर्य

1. रथयात्रा

जगन्नाथ धाम में रथयात्रा के समय कितने भक्तजन रथ के पहिए के नीचे मोक्ष प्राप्ति की आशा में जान-बूझकर दबकर मर जाते थे। मानव सभ्यता को कलंकित करने वाला यह नृशंस कार्य हर तीसरे वर्ष होता था। ब्रिटिश सरकार ने इस प्रथा को कानून द्वारा बंद किया।

2. काशी-करवट

काशी धाम में आदि विश्वेश्वर के मंदिर के पास एक कुआं है, जिसमें मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा से कूदकर भक्तजन अपनी जान दे दिया करते थे, इस प्रथा को ब्रिटिश सरकार ने दूर किया।

3. गंगा प्रवाह

अधिक अवस्था बीत जाने पर भी यदि कोई संतान न हुई, तो कितने माता-पिता यह मनौती करते थे कि यदि हमें संतान हुई तो हम अपने बच्चे को गंगा सागर की भेंट चढ़ायेंगे। इस निष्ठुर मनौती को पूरी करने के लिए वे अपनी पहली सन्तान को गंगा सागर में छोड़ देते थे। इस क्रूर प्रथा को ब्रिटिश सरकार ने 1835 ईस्वी में कानून द्वारा बंद कर दिया।

4. चरक पूजा

काली के मोक्षाभिलाषी उपासक के मेरुदंड में दो लोहे के हुक धंसाकर उसे रस्सी के द्वारा चर्खी के एक छोर से लटका देते थे और चर्खी के दूसरे सिरे में बंधी हुई रस्सी को पकड़कर उस चर्खी को खूब जोर से तब तक नचाते थे जब तक उस उपासक के प्राण-पखेरू उड़ न जाएं। इस प्रथा को ब्रिटिश सरकार ने 1863 में कानून द्वारा बंद किया।

5. सतीदाह

विधवा स्त्री को उसके मृत पति के शव के साथ उसी की चिता में जला दिया जाता था। इस अमानुषिक प्रथा का अंत ब्रिटिश सरकार ने 1841 में किया। यह प्रथा भारत में सर्वत्र प्रचलित थी।

6. कन्या वध

उड़ीसा और राजपुताना में कुलीन क्षत्रीय कन्या के जन्म होने पर तत्काल ही उसे गला दबाकर उसे इस भय से मार डालते थे कि उसको जिन्दा रखने पर उनको किसी न किसी का ससुर और साला बनना पड़ेगा। इस जघन्य प्रथा को ब्रिटिश सरकार ने 1870 में कानून से बंद किया।

7. नर-मेध

यह पैशाचिक प्रथा ऋग्वेदीय शुन: शेप सूक्त को आधार मानकर उत्तर और दक्षिण भारत में प्रचलित थी। इसमें किसी अनाथ व निर्धन मनुष्य को दीक्षित करके यज्ञ में उसकी बलि चढ़ाई जाती थी। इस निष्ठुर प्रथा को ब्रिटिश सरकार ने 1845 में एक्ट 21 बनाकर दूर किया।

8. महाप्रस्थान

इसका आधार मनुस्मृति 6/31 माना जाता था पर वहां इसकी विधि दूसरी ही बताई गई है। यह एक प्रकार का आत्मघात है। इस व्रत को करने वाले मोक्षलाभार्थ जल में डूबकर अथवा आग में जलकर अपनी जान दे देते थे। मृच्छकटिक नाटक में लिखा है कि राजा शूद्रक ने भी महाप्रस्थान किया था। इस प्रथा को भी मिटाने वाली ब्रिटिश सरकार ही थी।

9. तुषानल

कोई-कोई अपने किसी पाप के प्रायश्चित स्वरूप अपने को भूसा या घास की आग से जलाकर भस्म कर देते थे। कुमारिल भट्ट ने बौद्धों से विद्या ग्रहण कर फिर उन्हीं के धर्म का खंडन करने के पाप से मुक्त होने के लिए इस व्रत को किया था। सरकारी कानून ने ही इस राक्षसी प्रथा का अंत किया।

10. हरिबोल

यह प्रथा बंगाल में प्रचलित थी। असाध्य किम्वा मरणासन्न रोगी को गंगा में ले जाकर उसे गोते दे-देकर स्नान कराते तथा उससे कहते थे कि 'हरि बोल, बोल हरि'। यदि वह इस प्रकार गोते खाते-खाते मर गया, तो वह बड़ा भाग्यवान समझा जाता था और यदि नहीं मरा, तो वहीं पर अकेले तड़प-तड़पकर मर जाने के लिए छोड़ दिया जाता था। वह घर वापस नहीं लाया जाता था। इस जघन्य प्रथा को ब्रिटिश सरकार ने 1831 में कानून द्वारा बंद किया।

11. मृगुत्पन्न

यह प्रथा गिरनार और सतपुड़ा की घाटियों में प्रचलित थी। वहां नवयुवक अपनी माताओं के द्वारा महादेवजी से की हुई इस मनौती को पूरी करने के लिए 'यदि हमें सन्तान होगी तो हम अपनी पहली सन्तान से मृगुत्पन्न करावेंगी' पहाड़ की चोटी से गिरकर अपने प्राण दे डालते थे। इस प्रथा को भी ब्रिटिश सरकार ने ही बंद किया।

12. धरना

याचक लोग विष या शस्त्र हाथ में लेकर गृहस्थों के द्वार पर बैठ जाते थे और उनसे यह कहते थे कि हमारी अमुक कामना को पूरी करो, नहीं तो हम जान दे देंगे। बिचारे गृहस्थों को उनकी अनुचित इच्छाएं भी पूरी करनी पड़ती थीं। इस प्रथा को ब्रिटिश सरकार ने 1820 में बंद किया।

पुनश्च

- अंग्रेजों ने सन् 1795 में अधिनियम 11 के द्वारा शुद्रों को सम्पति रखने का अधिकार प्रदान किया।
- सन् 1773 में ईस्ट इंडिया कंपनी में रेगुलेटिंग एक्ट पास कर इस देश में समानता पर आधारित न्याय व्यवस्था कायम किया।
- अंग्रेजी सरकार ने 1813 में कानून बनाकर देश की सभी जातियों और धर्मों के लोगों के लिए शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार दिया।
- सन् 1835 में अंग्रेजों ने कानून बनाकर शुद्रों को कुर्सी पर बैठने का अधिकार दिया।
- सन् 1835 में ही लार्ड मैकाले ने शिक्षा को राज्य का विषय बनाया और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर भारतीयों को प्रदान किया।

साभार : हिन्दू जाति का उत्थान और पतन
-रजनीकांत शास्त्री

मनुष्य की गरिमा के लिए किया
जाने वाला संघर्ष ही मनुष्य की
आजादी का असली संघर्ष है
—बाबा साहेब डॉ. भीमराव
आम्बेडकर

एक ऐतिहासिक पुरुष का जीवन

जीवन परिचय

- 14 अप्रैल, 1891 माता भीमाबाई और पिता सूबेदार रामजी मालोजी आम्बेडकर की चौदहवीं संतान के रूप में महू छावनी इंदौर, मध्य प्रदेश में जन्म
- अप्रैल, 1906 श्री भीखू वालंगकर की पुत्री रमाबाई से विवाह
- दिसम्बर, 1912 में पुत्र यशवंत राव का जन्म
- जुलाई 1917 बड़ौदा के राजा महाराजा गयाकवाड़ के यहां फौजी सचिव के पद पर नियुक्त, किन्तु उन्हें यहां पर निम्न जाति के होने के चलते अपमानजनक व्यवहार के फलस्वरूप नौकरी छोड़नी पड़ी
- नवम्बर, 1923 में बम्बई हाईकोर्ट में वकालत शुरू
- मई, . 1935 में श्री कृष्णाराव वी. कबीर की पुत्री भरदा कबीर से दूसरी शादी।
- 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली स्थित निवास में महापरिनिर्वाण

छात्र जीवन एवं उपलब्धियां

- नवंबर, 1900 में राजकीय स्कूल सतारा में प्रवेश
- जनवरी, 1908 में बंबई विश्वविद्यालय से मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, तत्पश्चात एलफिस्टन कॉलेज, बंबई में प्रवेश
- जनवरी 1913 में परशियन तथा अंग्रेजी के साथ स्नातक (बी.ए.) परीक्षा उत्तीर्ण
- जुलाई 1913 महाराजा गायकवाड़ की छात्रवृति पर अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में शिक्षा प्रारंभ
- जुलाई 1915 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय से ही अर्थशास्त्र में एम.ए. उत्तीर्ण, अन्य विषय समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र, मानवशास्त्र तथा राजनीति का भी अध्ययन
- जनवरी 1916 भारत में दलित वर्ग का पक्ष करने के 'मूल नायक'
- जून 1919 पीएचडी के शोध निबंध को पूर्ण पश्चात लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस लंदन गए
- जून 1917 महाराजा बड़ौदा की छात्रवृति की के कारण लंदन में अर्थशास्त्र विषय में एमए उपाधि के लिए निबंध पर एक वर्ष कार्य करने पश्चात भारत वापस आना पड़ा
- सितंबर, 1920 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉ एंड पॉलिटिकल साइंस में पुन: प्रवेश, साथ ही इन' में बैरिस्टी की पढ़ाई के लिए प्रवेश
- सितंबर 1920 में बैरिस्टी के अध्ययन के लिए के 'ग्रेज इन' विश्वविद्यालय में प्रवेश
- जून 1923 में अर्थशास्त्र में एमएससी की उपा लिए लंदन विश्वविद्यालय में ब्रिटिश भारत में भ अर्थव्यवस्था का प्रांतीय विकेन्द्रीकरण नामक श से उनके शोध निबंध को स्वीकृति
- जून 1923 में जर्मनी के बॉन विश्वविद्यालय में महीने तक अर्थशास्त्र का अध्ययन
- अप्रैल 1923 में भारत वापस
- सितंबर 1923 में बैरिस्टर घोषित
- अप्रैल 1925 में भारत में भारी अर्थव्यवस्था का विकेंद्रीकरण निबंध का परिशोधन और परिवर्द्धन हुए ब्रिटिश भारत में प्रांतीय अर्थव्यवस्था का विक नामक ग्रंथ का प्रकाशन
- नवम्बर 1926 में धरवाड़ा में दलित वर्ग के विद्यार्थि के लिए हॉस्टल स्थापित किया
- अप्रैल 1927 में 'बहिस्कार भारत' नाम से पाक्षिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया

- जुलाई 1927 में दलितों के लिए चौदार तालाब से पानी के प्रयोग का अधिकार प्राप्त करने के लिए रत्नागिरी जिले में ऐतिहासिक महान सत्याग्रह का नेतृत्व किया
- 25 दिसंबर 1927 को दलितों तथा शूद्रों के लिए भेदभाव पूर्ण एवं अमानवीय व्यवस्थाओं के विरोध स्वरूप मनुस्मृति की सार्वजनिक रूप से होली जलाई
- सितंबर 1932 में गांधी के साथ पूना में समझौते पर हस्ताक्षर किए, इस समझौते को 'पूना पैक्ट' के नाम से जाना जाता है
- मार्च 1930-32 लंदन के गोलमेज सम्मेलन में भाग लिए
- सितम्बर, 1932-34 भारतीय संवैधानिक सुधार पर संयुक्त संसदीय समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया
- जून 1928 में राजकीय विधि महाविद्यालय बंबई में प्राध्यापक नियुक्त
- जून 1935 में राजकीय विधि महाविद्यालय के प्रधानाचार्य नियुक्त, वह जूरिस्प्रूडेन्स के प्राध्यापक भी थे, वे विधि महाविद्यालय में अनुसूचित जाति के प्रथम प्रधानाचार्य भी थे
- मई 1937 में मराठी में 'महार अनी त्यांचे वचन' प्रकाशित किया
- मार्च 1939 में 'संघ बनाम स्वंत्रता' का प्रकाशन
- अगस्त 1936 में इंडेपेंडेंट लेबर पार्टी की स्थापना की।
- जनवरी 1937 में बंबई विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए
- दिसंबर 1940 में 'पाकिस्तान पर विचार' का प्रकाशन, इसका दूसरा संस्करण फरवरी 1945 में पाकिस्तान अथवा भारत का विभाजन शीर्षक से तथा 1946 में इसका तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ
- अप्रैल 1942 में आल इंडिया शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन की स्थापना की
- अप्रैल 1943 में 'रानाडे गांधी और जिन्ना' का प्रकाशन जो महादेव गोविंद रानाडे के 101वें जन्म दिवस पर दिये गये व्याख्यान पर आधारित था
- दिसम्बर 1943 में 'मिस्टर गांधी और अछूतों का उद्धार' का प्रकाशन, यह पत्र उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ पैसिफिक रिलेसन्स के भारत विभाग के कनाडा में हुए सम्मेलन में भारत में अछूतों की समस्या पर प्रस्तुत किया था
- जून 1945 में 'कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया?' का प्रकाशन
- अप्रैल 1946 में सिद्धार्थ कॉलेज, बंबई की स्थापना की
- जुलाई 1945 पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी बंबई की स्थापना की
- जुलाई 1946 में गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी परिषद से पद त्याग
- अक्टूबर 1946 में 'शूद्र कौन थे' का प्रकाशन, यह शूद्र किसी प्रकार भारतीय आर्यों के समाज में चतुर्थ वर्ण के रूप में सम्मिलित किए गए विषय पर बाबासाहेब का शोध ग्रंथ
- दिसंबर 1946 में संविधान सभा में पहला भाषण- संगठित भारत के लिए आह्वान किया
- अगस्त 1947 में संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम विधिमंत्री के रूप में नेहरू मंत्रिमंडल में सम्मिलित हुए
- मार्च 1947 में 'राज्य और अल्पसंख्यक समाज' का प्रकाशन, यह पुस्तक ब्रिटिश भारत सरकार को मौलिक अधिकार, अल्पसंख्यक के अधिकार पर आधारित
- अप्रैल 1948 में बंबई में सिद्धार्थ रात्रि स्कूल खोला, विज्ञान एवं तर्कसम्मत धर्म की खोज में
- नवम्बर 1948 में विधि मंत्री तथा प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में भारतीय गणराज्य के संविधान को संविधान सभा के हाथ में प्रस्तुत किया
- जून 1950 में औरंगाबाद में सिद्धार्थ विधि महाविद्यालय स्थापित किया
- दिसंबर 1950 में विश्व बौद्ध सम्मेलन, कोलम्बो में प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए
- जुलाई 1951 में 'भारतीय बौद्ध जनसंघ' की स्थापना की
- सितंबर 1951 में 'बौद्धों के लिए एक सर्वग्राह्य' प्रार्थना ग्रंथ 'बुद्ध उपासना पाठ' का संकलन किया
- अक्टूबर 1951 में नेहरू मंत्रिमंडल से त्याग पत्र
- नवंबर 1951 में हिन्दू समाज में व्याप्त विकृतियों में सुधार की दृष्टि से हिन्दू संहिता की नियमावली (हिन्दू कोड बिल) का निर्माण किया
- मई 1952 में कोलंबिया विश्वविद्यालय अमेरिका द्वारा अपने द्विशताब्दी समारोह पर विशेष दीक्षांत समारोह में एलएलडी. (डॉक्टर ऑफ लॉज) की मानद उपाधि से सम्मानित
- दिसंबर 1954 में विश्व बौद्ध सम्मेलन रंगून में प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए
- मई 1955 में भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना की
- दिसंबर 1955 में 'भाषायी राज्यों पर विचार' का प्रकाशन हुआ
- अक्टूबर 1956 में नागपुर में 14 अक्टूबर को अपने 5 लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म में ऐतिहासिक धर्मान्तरण किया। महा जननायक व राजनीतिज्ञ के रूप में
- दिसंबर 1956 में 'बुद्ध और उनका धर्म' जो उनके अंतिम ग्रंथ के रूप में उनके परिनिर्वाण के पश्चात प्रकाशित हुआ, इनके अतिरिक्त उनके जीवन में अप्रकाशित ग्रंथ महाराष्ट्र सरकार द्वारा किये जाने वाले 12 खंडों में सम्पूर्ण आम्बेडकर वाग्मय में सम्मिलित किये गये हैं, हिंदी में अब तक इनके 23 खंड प्रकाशित हो चुके हैं, भारत सरकार के डॉ. आम्बेडकर प्रतिष्ठान दिल्ली के द्वारा। देश के महा विधिवेत्ता
- मार्च 1956 में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना
- 6 दिसंबर को 1956 महापरिनिर्वाण

आम्बेडकर की बातें

मैंने किसी एक जाति या समुदाय के लिए काम नहीं किया। अगर किसी को भरोसा नहीं तो वो संविधान पढ़े।

जागृति और परिवर्तन समाज की उपयोगिता के लिए आवश्यक तत्व हैं।

अपने विवेक की वृद्धि का निरंतर प्रयास अवश्य करना चाहिए।

ज्ञान ही मनुष्य के जीवन की नींव है।

समानता का सिद्धांत किसी भी समाज के लिए प्राणवायु के समान है।

मनुष्य का जीवन सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि है, इससे ऊपर न तो कोई धर्म है, न ईश्वर और न ही कोई सम्प्रदाय या सिद्धांत।

उस धर्म में प्राण नहीं त्यागूंगा, जिसमें पहली सांस लिया हूं

यदि नई दुनिया पुरानी दुनिया से भिन्न है तो नई दुनिया को पुरानी दुनिया से अधिक धर्म की जरूरत है। डॉ. आंबेडकर ने यह बात 1950 में बुद्ध और उनके धर्म का भविष्य नामक एक लेख में कही थी। वे कई बरस पहले ही मन बना चुके थे कि वे उस धर्म में अपना प्राण नहीं त्यागेंगे जिस धर्म में उन्होंने अपनी पहली सांस ली है। 14 अक्टूबर 1956 को उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया। यह उनका कोई आवेगपूर्ण निर्णय नहीं था, बल्कि इसके लिए उन्होंने पर्याप्त तैयारी की थी। उन्होंने भारत की सभ्यतागत समीक्षा की। उसके सामाजिक-आर्थिक ढांचे की बनावट को विश्लेषित किया था और सबसे बढ़कर हिन्दू धर्म को देखने का विवेक विकसित किया था। गेल ओमवेट ने आंबेडकर की एक जीवनी लिखी है, उसका नाम है- डॉक्टर आंबेडकर : प्रबुद्ध भारत की ओर। यह प्रबुद्धता आंबेडकर के सामाजिक-आर्थिक चिंतन में तो दिखती ही है, वे धर्म के बिना मनुष्य की कल्पना भी नहीं करते। मुंबई के मिल मजदूरों, झुग्गी बस्तियों और गरीब महिलाओं के बीच भाषण देते हुए आंबेडकर समझ रहे थे कि भारतीय मन धर्म के बिना नहीं रह सकता। लेकिन क्या यह वही धर्म होगा जिसने उस जीवन का अनुमोदन किया था, जिसके कारण दलितों को सदियों से संत्रस्त होना पड़ा है। वे इस धर्म को त्याग देना चाहते थे। आंबेडकर द्वारा बौद्ध धर्म को उचित धर्म मानने के पीछे इस धर्म में छिपी नैतिकता तथा विवेकशीलता रही।

जल है तो कल का अर्थ जल समझना होग

83
प्रतिशत ताजे और स्वच्छ पानी का उपयोग फिलहाल विभिन्न प्रकार की फसलों की सिंचाई के लिए किया जा रहा है उपयोग (राष्ट्रीय समेकित जल संसाधन विकास आयोग के आंकड़ों के अनुसार देश भर में)

02
सौ लीटर पानी बचेगा शेविंग करते समय नल बंद करने से, मग का उपयोग अच्छा विकल्प

05
हजार ली. बर्बाद टॉयलेट लीक से

01
सौ 30 ली. बचेगा बाल्टी से कार धोने से

वर्ष 2017 के मानसून के बाद यह स्पष्ट हो गया था कि देश में सामान्य से कम बारिश होगी। तब लगभग 5.2 प्रतिशत की कमी के साथ मानसून समाप्त हुआ था। करीब 50 जिलों में सामान्य वर्षा हुई जबकि एक तिहाई से अधिक यानी लगभग 215 जिलों में कम बारिश हुई। बारिश में इस कमी से कृषि और दूसरी गतिविधियों पर बुरा असर पड़ा। मानसून के पहले दौर में (जून से जुलाई, 2017) एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने यह आया कि वर्षा लगभग 2.5 प्रतिशत अधिक हुई लेकिन अगस्त और सितंबर के दौरान वर्षा में 12.5 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। इसके नतीजे के रूप में काफी क्षेत्र प्रभावित हुए। अधिकतर जिले जहां कम बारिश हुई वे हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के विदर्भ में थे। भारत के मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि वर्ष 2018 में देश के लिए दक्षिण पश्चिम का मानसून सामान्य होगा। पूर्वानुमान यह है कि कुल वर्षा दीर्घ अवधि औसत (एलपीए) का 97 प्रतिशत हो सकती है। हालांकि हमें याद रखने की आवश्यकता है कि इस प्रकार के पूर्वानुमान में 5 प्रतिशत त्रुटि की संभावना हमेशा ही बनी रहती है। इसका तात्पर्य है कि सामान्य मानसून एलपीए के 96-104 प्रतिशत की सीमा के भीतर हो सकता है। मगर इस मसले पर किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले हमें थोड़ा सतर्क होने की आवश्यकता होती है, क्योंकि कोई नियत पूर्वानुमान करना बहुत जल्दबाजी होगी। जून–जुलाई, 2018 तक जाकर ही हमारे पास अधिक विश्वसनीय जानका होगी और उस समय तक हमें धैर्य से काम लेना होगा इसकी वजह स्पष्ट है। पिछले साल 2017 में सामान मानसून का पूर्वानुमान किया गया था। लेकिन अंतिम परिणाम यह था कि वर्षा में लगभग 5.2 प्रतिशत की कमी थी और कुछ इलाकों में और भी कम बारिश हुई थी। दूसरा मुद्दा यह है कि जब हम मानसून और वर्षा की बात करते हैं तो हम पूरे देश या क्षेत्रीय स्तर का औसत लेते हैं। संपूर्ण परिदृश्य विचलित करने वाला नहीं हो सकता है, परंतु विविधताओं वाला यह विशाल देश भारत विभिन्न क्षेत्रों के लिए अलग तथ्य प्रकट कर सकता है। इस प्रकार औसत के आंकड़े को समय के साथ भ्रामक सिद्ध किया गया है। तीसरा मुद्दा है कि भारत में केवल तीन महीनों तक वर्षा और अन्य प्रकार के अवक्षेपण होते हैं। कुल वर्षा का लगभग 75 प्रतिशत इन्हीं महीनों के दौरान वर्षण होता है। साल के बाकी हिस्सों में हल्की वर्षा या अन्य प्रकार के अवक्षेपण होते हैं। तत्काल महत्व का मुद्दा यह है कि चूंकि वर्षा, बर्फ आदि हमें बहुत कम अवधि के लिए प्राप्त होते हैं, इसलिए इनसे मिलने वाले पानी को पूरी तरह उपयोग कर पाना संभव नहीं हो पाता है। इसका एकमात्र समाधान यह है कि इस तरह थोड़ी मात्रा में मिलने वाले पानी का संग्रह करने के प्रबंध किए जाएं, ताकि हम अगले मानसून से पहले पूरे वर्ष के दौरान उचित मात्रा में पानी हासिल कर सकें। हमें सूखे दिनों के लिए पानी संजोने की जरूरत है। लेकिन त्रासदी यह है कि हम इस पहलू को सिरे से अनदेखा कर रहे हैं।

प्राचीन मान्यताएं

एक और प्राचीन कहावत है कि आपको दोबारा पहिए का आविष्कार करने की जरूरत नहीं है. इसका आशय यह है कि हमें वह सब बनाने की जरूरत नहीं जो पहले से अस्तित्व में है। यह एक उत्तम नियम है। मगर अक्सर समय के साथ कुछ चीजें भुला दी जाती हैं, खासतौर पर वे जो नए जमाने में उपयुक्त नहीं होतीं। समय के साथ हमें आधुनिक युक्तियां और संसाधन उपकरण उपयोग हेतु मिल जाते हैं और हम उनका इस्तेमाल शुरू कर देते हैं। इस प्रक्रिया में पुरानी चीजें और उपकरण भुला दिए जाते हैं या वे अप्रचलित हो जाया करती हैं। ऐसा हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में लगभग हर एक मोर्चे पर घटित होता रहता है। हालांकि हालात बदल गए हैं और हमें पुरानी तकनीकों (युक्तियों) को अब दोबारा इस्तेमाल में लाने की जरूरत है। एक संभावना यह भी हो सकती है कि पुरानी प्रणालियों या विधियों को नया बनाकर वर्तमान परिस्थितियों में इस्तेमाल किया जा सकता है। पानी की हर बूंद को सहेजकर इससे भविष्य की संसाधन वृद्धि की जा सकती है।

भयावह तस्वीर

68 करोड़ लोग पानी की भारी कमी से जूझ रहे हैं

84 फीसदी ग्रामीण घरों में पाइप से पानी की आपूर्ति नहीं होती

70 फीसदी देश में उपलब्ध पानी आर्सेनिक और फ्लोराइड से दूषित है

07 सौ लीटर पानी बचेगा हर बार ब्रश करते समय नल बंद करने से

01 हजार लीटर पानी बचेगा हर महीने लीकेज रोकें तो

वातानुकूलित प्रणाली से निकला जल

एसी के दाम गिरने, बिजली की बेहतर उपलब्धता और लोगों की वहन क्षमता बढ़ने से हाल के वर्षों में ये उपकरण बहुत लोकप्रिय हो गए हैं। सभी एसी में ऐसे निकास होते हैं जो संघनित पानी को बाहर छोड़ते हैं। यह पानी वैसे तो मात्रा में बहुत कम होता है पर पूरे दिन के दौरान यह मात्रा अधिक हो जाती है। ऑफिसों में ये मशीनें प्रतिदिन औसतन 90 लीटर तक पानी उत्पन्न करती हैं। अगर हम चाहें तो घर-आसपास में इसका उपयोग करके लाखों-करोड़ों लीटर पानी बचाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

सिंचाई के लिए पीईटी बोतलों का उपयोग

शहरों और कस्बों में रिहायशी जगहें छोटी होती जा रही हैं। फूल-पौधे लगाने के लिए वहां भूमि की गुंजाइश कम है। मगर लोग सजावट के लिए पौधे लगाना चाहते हैं। अनेक परिवार रसायनों से मुक्ति पाने के लिए घर में सब्जियां और फल उगाने में दिलचस्पी लेने लगे हैं। उन्हें इस तरह उगाए जाने वाले पौधों को नियमित तौर पर गर्मी में पानी देना होता है। हम पीईटी के बेकार पड़े बोतलों के ढक्कन में छोटा छेदकर उसे मिट्टी में थोड़ा दबाकर ऊपर से पानी पौधों की जड़ों तक पहुंचा सकते हैं। इससे पानी की बर्बादी रुक सकती है।

आरओ प्रणाली से निकले पानी को भी सहेजें

पानी से होने वाले रोगों में बेतहाशा वृद्धि और नगर पालिकाओं की जलापूर्ति प्रणाली की अकुशलता के चलते लोग पानी के लिए आरओ लगवा रहे हैं। घरों में छोटे और बड़े समुदाय में अधिक क्षमता के आरओ लग रहे हैं। पानी से जुड़ी व्यावसायिक व्यवस्थाएं भी बनाई गई हैं जो बोतलबंद पानी मुहैया करती हैं। सभी आरओ सिस्टम से शुद्ध पानी के समानांतर पानी बेकार चला जाता है। सामान्य तौर पर यह बेकार पानी नाले या सीवर में बहा दिया जाता है। घरेलू स्तर पर इसकी मात्रा भले ही कम प्रतीत होती है, लेकिन समुदाय के स्तर पर यह मात्रा बहुत ज्यादा होती है और काफी पानी बर्बाद होता है। इसका इस्तेमाल बर्तन धोने में किया जा सकता है। इसे लॉन, किचेन गार्डन या गमले वाले पौधों की सिंचाई में इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसे भी हो पानी व्यर्थ नहीं होना चाहिए, इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

टोंटीयुक्त पानी के बर्तनों की उपयोगिता

पुराने समय में टोंटी वाले बर्तनों का उपयोग किया जाता था। इसमें से पानी धीरे-धीरे और एक नियंत्रित तरीके से बाहर आता था। नलकी, वाश बेसिन, टायलेट शावर आदि के आविष्कारों के साथ इस तरह के पुराने परंपरागत बर्तनों को पीछे छोड़ दिया गया है। लेकिन हमें इनका पुनः आविष्कार कर इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। विशेषकर टोंटी वाले धातु के बर्तन ज्यादा उपयोगी हैं, क्योंकि इनके पुनः प्रयोग से हर दिन बड़ी मात्रा में बहुमूल्य पानी का बचाव किया जा सकता है।

फिर लौटना होगा कुछ दशक पीछे

किसी प्रकार से टोंटी वाले बर्तन मुस्लिम संस्कृति से संबद्ध हो गए और यह मुस्लिम परिवारों तथा संस्थाओं का हिस्सा बन गए। उदाहरण के रूप में आज भी अधिकतर मस्जिदों में इसका इस्तेमाल प्रक्षालन (नमाज से पहले हाथ, चेहरा, पैर, आदि को धोने) के लिए किया जाता है। इसका मकसद भी पानी को बचाना है। अभी कुछ दशक पहले तक सड़क के किनारे और मन्दिरों आदि में तांबे के ऐसे बर्तन प्याऊ में रखे होते थे। इसके इस्तेमाल के पीछे मूल विचार पानी की बर्बादी को कम करना और रोकना ही था।

निष्कर्ष

हम इस बात को बखूबी जानते हैं कि आने वाले समय में कई देशों में पानी की उपलब्धता एक बड़ा मुद्दा होगा। इन देशों में एक देश भारत भी होगा। राष्ट्रीय समेकित जल संसाधन विकास आयोग के अनुसार देश में उपलब्ध लगभग 83 प्रतिशत ताजे पानी का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। बाकी बचे 17 प्रतिशत पानी से घरेलू, औद्योगिक और दूसरे क्षेत्रों में पानी से जुड़ी जरूरतों को पूरा किया जाता है। वर्ष 2050 के लिए आयोग ने यह अनुमान लगाया है कि पानी की मांग बढ़कर 1180 अरब क्यूबिक मीटर हो जाएगी। भारत के लिए पानी की यह मांग पूरी करना बेहद कठिन होगा। पानी की कमी की वजह से अस्वास्थ्यकर आदतें जन्म लेती हैं जो बदले में विशेष तौर पर बच्चों में अनेक स्वास्थ्य समस्याओं को न्योता देती हैं। इसलिए हमें उपलब्ध पानी का संरक्षण करने के सभी संभव प्रयास करने चाहिए और पानी की खपत में किफायत बरतनी चाहिए। पानी की बर्बादी को रोककर हम पानी के संरक्षण के लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। इससे आने वाली पीढ़ियां पानी के लिए संघर्ष करने से बच सकेंगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

फायदा संग चिंताएं भी कई

मानव जाति अपने रहन-सहन में बदलाव लाने के लिए कई प्रकार की तकनीक का विकास करती आ रही है। इनमें से कुछ तकनीक ने विश्व एवं मानव के जीवंत व्यवहार को प्रबल रूप से बदल दिया है। पहिये की खोज से लेकर इंजन और कंप्यूटर जैसी तकनीकों की खोज ने आज के विश्व की दशा एवं दिशा बदलने में अहम भूमिका निभाई है। लेकिन अब आगे क्या? स्मार्ट गैजेट, मशीनें और रोबोट आज विश्व पर विजय प्राप्त कर रहे हैं और इन्होंने मानव जीवन को बदल कर रख दिया है। ये सभी हमें प्रौद्योगिकी के उपहारस्वरूप मिले हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से हम कृत्रिम बुद्धि या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कहते हैं। कृत्रिम बुद्धि कंप्यूटर विज्ञान का एक क्षेत्र है। यह ऐसी बुद्धिमान मशीनों का निर्माण करने पर केंद्रित है जो मानव मस्तिष्क की तरह या उससे भी बेहतर ढंग से कार्य कर सके। कृत्रिम बुद्धि एक विस्तृत डोमेन तकनीक है जो सांख्यिकीय विश्लेषण, मशीनों द्वारा सीखना, नमूनों की पहचान करना, तर्क करना, संभाव्यता सिद्धांत, जैविक रूप से प्रेरित दृष्टिकोण जैसे- तंत्रिका नेटवर्क, विकासवादी कंप्यूटिंग या मॉडलिंग और इन जैसी विभिन्न शाखाओं का समावेश है। इन तरीकों का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के बुनियादी कार्यों को कृत्रिम बुद्धि प्रौद्योगिकी द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इनके कुछ उदाहरणों में शामिल है- शिक्षा, तर्क, वर्गीकरण, पूर्वानुमान, समस्या समाधान, भाषा की समझ, परिकल्पना गढ़ना आदि। ये सूची अंतहीन है। धातु से निर्मित बुद्धिमान प्राणियों का अस्पष्ट वर्णन ग्रीक पौराणिक कथाओं में पाया जा सकता है। टैलस नाम का एक प्राणी कांस्य धातु से क्रेट में यूरोप को समुद्री डाकू और आक्रमणकारियों से बचाने के लिए बनाया गया था। औद्योगिक क्रांति और विश्व युद्ध प्रथम और द्वितीय ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी प्रगति की है। 1948 में ब्रिटिश गणितज्ञ एलन ट्यूरिंग ने अपनी पुस्तक 'इंटेलिजेंट मशीनरी' में लिखा है 'मेरा विचार यह है कि क्या ऐसी मशीन का निर्माण किया जा सकता है जो मानव मन के व्यवहार को बहुत नजदीक से पहचान सके'। 1948 और 1949 में अमेरिका में जन्मे ब्रिटिश न्यूरो फिजियोलॉजिस्ट और रोबोटीशियन विलियम ग्रे वाल्टर ने पहली बार रोबोट बनाया जिसका नाम एलमर और एलसी रखा। इन रोबोटों को उनकी धीमी गति के कारण कछुआ कहा जाता था। उनमें प्रकाश की दिशा में चलने की क्षमता थी, लेकिन कृत्रिम बुद्धि शब्द सबसे पहले अमेरिकी अग्रणी कंप्यूटर वैज्ञानिक और आविष्कारक जौन मेकरथी ने 1956 में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के डार्मोथ सम्मेलन में प्रयोग किया था। इसके साथ ही इस प्रकार की मशीन बनाने की शुरुआत हो गई जो मनुष्य की तुलना में सामान्य बुद्धि से अधिक थी।

1970 के दशक के शुरुआती दिनों में वैज्ञानिक समुदाय द्वारा किए जा रहे कई प्रयासों के बावजूद कृत्रिम बुद्धि की खोज खतरे में थी, क्योंकि सरकारों द्वारा इसमें भारी निवेश के बावजूद कोई संतोषजनक प्रगति नहीं हुई थी। 1980 के दशक में कृत्रिम बुद्धि ने एक विशिष्ट व्यापार समाधान के रूप में अलग मोड़ लिया। डिजिटल उपकरण निगम, कृत्रिम बुद्धि के लाभ का अहसास करने वाले कुछ संगठनों में से एक था। 1990 में ऑस्ट्रेलियाई रोबोट वैज्ञानिक रोडनी ब्रूकस ने एक पेपर प्रकाशित किया 'हाथी नहीं खेलते शतरंज'। उन्होंने एक 'व्यवहार आधारित' दृष्टिकोण की शुरुआत की, जिसके द्वारा अधिक बुद्धिमान रोबोट बनाने में मदद मिली। तब से लेकर अब तक कृत्रिम बुद्धि ने एक लंबा सफर तय किया है। स्मार्टफोन, ड्रोन, रोबोट और उपग्रह आदि बुद्धिमान मशीनों के दैनिक जीवन के उदाहरणों में से कुछ हैं। लेकिन क्या ये केवल कुछ ही उदाहरण हैं ऐसी बुद्धिमान तकनीक के अनुप्रयोगों के? जवाब साफ तौर पर ना है। वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी ने भी कई क्षेत्रों में मनुष्यों को चुनौती देना शुरू कर दिया है।

कृत्रिम बुद्धि के उपयोग कई विज्ञान कथा कार्टून वास्तविकता से केवल कुछ साल ही दूर हैं। कृत्रिम बुद्धि अनुप्रयोगों के सभी क्षेत्रों की चर्चा करना एक मुश्किल काम होगा, इसलिए हम केवल इसके कुछ सामान्य अनुप्रयोगों की चर्चा कर रहे हैं।

गेमिंग

गेमिंग में कृत्रिम बुद्धि का सबसे आम उपयोग गैर खिलाड़ी चरित्र या मशीन खिलाड़ी बनाना है। मशीन खिलाड़ी मानव खिलाड़ी के साथ खेलने के लिए निर्देशों के एक पूर्व सैट का उपयोग करता है लेकिन मशीन लर्निंग की तकनीकों के साथ मशीन खिलाड़ी अपने पिछले अनुभवों से सीखते हैं, खेलते हैं तथा अगले दौर में अपने प्रदर्शन को सुधारने की कोशिश करते हैं।

ध्वनि की पहचान

हममें से हर एक गूगल और अन्य कंपनियों के ऐसे विज्ञापनों को देखते होंगे जो आपसे मोबाइल पर बात करने के लिए कहते हैं और वह आपको जवाब देता है। यह ध्वनि की पहचान का एक उदाहरण है। मशीन लर्निंग की क्षमता के साथ, सर्च इंजन आपको सर्वोत्तम परिणाम प्रदान करने में सक्षम होता है। संयुक्त एयरलाइंस ने उड़ान सूचना के लिए कीबोर्ड को बदल दिया है और उड़ान संख्याएं एवं शहर के नाम के लिए ध्वनि पहचान का उपयोग किया है। इस क्षमता का उपयोग कंप्यूटर निर्देशों को निर्देशित करने के लिए भी किया जा सकता है।

विनिर्माण

लगभग सभी विनिर्माण इकाइयां अब मशीनों का उपयोग करती है जो स्वचालित हो रही है और जिनसे माल के उत्पादन में शामिल समय और लागत में कमी आती है। फॉक्सकॉन नामक एक बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनी जो एपल, गूगल और ऐमेजोन को गैजेट्स की आपूर्ति करती है, ने श्रम की लागत को संतुलित करने के लिए 10,000 रोबोटों को रोजगार दिए हैं। दस्ताजों की डिजिटल डिजाइनिंग, यंत्रों और ड्रग्स की 3 डी प्रिंटिंग इस क्षेत्र के कुछ अन्य उदाहरण है।

वित्तीय क्षेत्र

वित्तीय क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धि के कई उपयोग है। यह सुरक्षित लेन-देन सुनिश्चित करने के लिए और धोखाधड़ी को रोकने के लिए बैकों द्वारा नियोजित किया जाता है। वित्त प्रक्रिया में उत्पन्न बड़े डाटा को संसोधित करने और समझने के लिए भी कृत्रिम बुद्धि का उपयोग किया जाता है, ताकि त्वरित डाटा प्रोसेसिंग हो और इसे समझने में सक्षम बना जा सके।

परिवहन

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस हमारे परिवहन के उपयोग के तरीकों को बदल रहा है। ऑनलाइन मानचित्र अब उपलब्ध है जो हमारे गंतव्य के लिए मार्ग दिखाते है। यह हमें कम दूरी का रास्ता सुझाते है और हमें अवगत कराते है उन सड़कों से जहां ट्रैफिक जाम की संभावना हो सकती है। ड्राइवरविहीन कार/ट्रक भी अब सड़कों पर चलने लगे है और वो दिन दूर नहीं अब सड़कों पर इस तरह की कारें एक आम दृश्य बन जाएगी। अधिक यातायात के दौरान किराए पर अधिभार लेना मोबाइल ऐप कैब द्वारा कृत्रिम बुद्धि तकनीक के उपयोग का एक उदाहरण है।

सैन्य क्षेत्र

युद्ध के दौरान जीवन का नुकसान कम करने के लिए सैन्य क्षेत्रों में भी कृत्रिम बुद्धि का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। बुद्धिमान हथियारों का प्रयोग पहले से ही किया जा रहा है। बुद्धिमान सिपाही रोबोट अनुसंधान के अधीन है जो मानव सैनिकों के स्थान पर इस्तेमाल किए जा सकते है। ड्रोन और स्मार्ट वाहनों का इस्तेमाल भी सैन्य क्षेत्र में किया जा रहा है।

स्वास्थ्य देखभाल

एमआरआई, सिटी-स्कैन और अल्ट्रासाउंड आदि कुछ सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले छवि आधारित नैदानिक उपकरण है। विभिन्न एल्गोरिथ्म आधारित कृत्रिम बुद्धि इंटरफेस भी उपलब्ध है, जो असामान्यताओं का अनुमान लगाते है और गलत एवं नकारात्मक परिणामों से बचाते है। गूगल पैरेंट कंपनी ने एक ऐसी कृत्रिम बुद्धि विकसित की है जो कैंसर का पता लगाने में मदद करती है। यही कार्य पहले केवल विशेषज्ञों द्वारा ही सम्भव हो सकता था।

रोबोट की सहायता से सर्जरी

यांत्रिक कार्यशालाओं के समान सर्जरी में भी रोबोट तैनात किए जा रहे है। सर्जरी में रोबोट की मदद से यह सम्भव हो गया है कि न्यूनतम प्रवेश और उच्च परिशुद्धता के साथ सर्जरी की जा सके। इससे मरीजों को ठीक होने में कम समय लगता है। अस्पताल में कम समय तक रहना पड़ता है और दर्द भी कम होता है। मतलब इससे सहुलियत बढ़ी है।

औषधि विकास

एक दवा को बाजार में आने में करीब 20 वर्ष का समय लगता है। कृत्रिम बुद्धि की मदद से औषधि विकास की प्रक्रिया बहुत आसान हुई है। जैसे संभावित दवा अणुओं की पहचान, फॉर्मूलेशन तैयार करने आदि में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उपयोग किया जा रहा है।

बायोइंफॉर्मेटिक्स

इसका एक क्षेत्र जीव विज्ञान और कंप्यूटर का एक साथ उपयोग करता है। कृत्रिम बुद्धि के उपयोग ने कोशिकाओं के शरीर विज्ञान और जैव रसायन की समझ को आसान बना दिया है। कृत्रिम बुद्धि के उपयोग के लिए एक आभासी कोशिका बनाई जाती है। उपरोक्त के अलावा नर्सिंग सहायता प्रदान करने में एवं अस्पताल प्रबंधन तथा प्रयोगशाला के कार्य में भी कृत्रिम बुद्धि को तैनात किया जा रहा है।

शिक्षा

कक्षा अध्यापन का पूरक बनना शिक्षा में कृत्रिम बुद्धि के कई अनुप्रयोगों में से एक है। विभिन्न छात्रों की अलग-अलग प्रगति दर होती है और शिक्षकों को गत छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप उनसे व्यक्तिगत रूप से निपटना मुश्किल लगता है। मशीन लर्निंग की एल्गोरिथ्म विकसित की गयी है जो अंतर्दृष्टि प्रदान करती है और शिक्षकों को उनके अध्यापन में आ रहे उस अंतराल की पहचान कराती है, जहां विद्यार्थी संघर्ष कर रहे है।

वैज्ञानिक रोबोट

2009 में कैंब्रिज विश्वविद्यालय और ऐरिस्टविथ विवि के वैज्ञानिकों ने 'ऐडम' नामक एक रोबोट बनाया। कृत्रिम बुद्धि का उपयोग करके इसने भविष्यवाणी की थी कि जैव रासायनिक अभिक्रिया को उत्प्रेरित करने में कुछ विशिष्ट जीव शामिल होते हैं। अगला आने वाला रोबोट 'ईव', ऐडम से अधिक उन्नत हो जाएगा। कृत्रिम बुद्धि ने निर्णय लेने की प्रक्रिया पहले की तुलना में आसान बना दी है। इससे मानव त्रुटियां कम हो रही हैं और दक्षता में वृद्धि हो रही है। लेकिन कृत्रिम बुद्धि से जुड़ी एक गंभीर बहस भी छिड़ी हुई है कि तकनीकी प्रगति हमेशा मानव रोजगार के लिए खतरा बनती है। हाल ही में कई आईटी कंपनियों में हजारों कर्मचारियों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा है, क्योंकि इनकी जगह बुद्धिमान मशीनों ने ले ली। 2016 में फॉक्सकॉन नामक कंपनी ने 60,000 श्रमिकों को रोबोटों के साथ बदल दिया। एक चिंता और है कि 'अगर रोबोट मनुष्यों की तुलना में अधिक कुशल हो जाते है तो क्या वे मानव जाति को खत्म कर सकते है?' स्टीफेन हॉकिंग ने भी कहा था, ''पूर्ण कृत्रिम बुद्धि के विकास से मानव जाति का अंत हो सकता है''।

भारत में विज्ञान का महत्व

हम स्वयं से पूछ सकते हैं-भारत में इस विकास का स्वरूप क्या है? सर्वप्रथम यह समझना होगा कि भारत में रचनात्मक कार्यों की एक लंबी और गौरवशाली परंपरा रही है। सिंधु घाटी की सुनियोजित सभ्यता, महान वैज्ञानिक खोजें जैसे-दशमलव आधारित स्थानीयमान प्रणाली तथा बीजगणित, ज्यामिति और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में हुए अन्य महत्वपूर्ण कार्य, रसायन विज्ञान में आसवन की खोज, स्वास्थ्य की समेकित प्रणाली और बीमारियों के इलाज के लिए आयुर्वेद, धातुकर्म की महान परंपराएं, सिविल इंजीनियरिंग और वास्तुकला का सामर्थ्य जिसको देश के भव्य प्राचीन स्मारकों और सड़क व्यवस्थाओं में विशेषतौर पर देखा जा सकता है। ये सभी प्राचीन भारतीय समाज में वैज्ञानिक समझ, वैज्ञानिक ज्ञान, वैज्ञानिक पद्धति और सौंदर्यबोध की विशेषताओं को चित्रित करते हैं।

इसी प्रकार अजंता की वास्तविक चित्रकारी और ऐलोरा की मूर्तियां, उत्तर की सूक्ष्म चित्रकारी, कर्नाटक और हिन्दुस्तानी संगीत परंपरा, भरतनाट्यम और कत्थक के प्रतिष्ठित नृत्य रूप, महान लोक कलाएं, प्रयासों की विविधिता और व्यापकता को चित्रित करते हैं। ये गतिविधियां लगभग पांच हजार साल पहले शुरू होकर कई सदियों तक चली। महान सफलताओं के युगों के बाद अंधकार के दौर भी आए।

परन्तु पिछले 300 सालों में अंतरराष्ट्रीय संघर्ष और उपनिवेशी प्रभुत्व के दौर में सकारात्मक और नई खोजों के चलते आम अवनति का दौर रहा। भारतीय दर्शन की महान बौद्धिक परंपरा या वैज्ञानिक तार्किकता जो पहले देखी गयी थी, इस परिदृश्य में कहीं नहीं थी, जिसके परिणामस्वरूप धर्मांधता, कट्टर संकीर्ण दिमागों और रुढ़िवादी तरीकों ने रचनात्मक गतिविधियों की जगह ले ली। इस वजह से जब पश्चिम में वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रांति हुई तो भारत इनका फायदा नहीं उठा सका।

वैज्ञानिक गतिविधियों में पुनर्जागरण

पिछले सौ वर्षों में स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान एक बौद्धिक हलचल पैदा हुई जिसने संपूर्ण भारतीय समाज को झकझोर दिया और उसके अनुरूप भारतीय वैज्ञानिक गतिविधियों में पुनर्जागरण हुआ, जिनमें केसी बोस, पीसी रे, सीवी रमन, एमएन साहा, एसएन बोस, एम विश्वेश्वरैया, एस रामानुजन इत्यादि महापुरुषों के वास्तविक कार्य उल्लेखनीय हैं। विज्ञान के क्षेत्र के बाहर कुछ शख्सियतें पैदा हुईं जैसे राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, अरविंद घोष और फिर महात्मा गांधी और स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले कई महान नेता। (इनका जिक्र पुनर्जागरण के व्यापक फलक को दिखाने के लिए किया गया है) विज्ञान और समाज के बीच में संबंधों को सबसे स्पष्ट तौर पर समझने वाले भारतीय नेताओं में जवाहर लाल नेहरू प्रमुख थे। उन्होंने टिप्पणी की थी कि 'विज्ञान मात्र परखनलियों पर नजर गड़ाने, इस या उस वस्तु को मिलाने और बड़ी-छोटी चीजों के उत्पादन तक ही सीमित नहीं है। विज्ञान अंततः मस्तिष्क और संपूर्ण जीवन को वैज्ञानिक तौर तरीकों के अनुसार प्रशिक्षित करने का एक तरीका है।' जवाहर लाल नेहरू का कहना था कि समाज के हर तबके में 'वैज्ञानिक मनोवृत्ति' का विकास करने के लिए निरंतर जारी रहने वाले एक व्यापक कार्यक्रम की जरूरत है।

विज्ञान प्रगति प्रस्ताव 1958

भारत सरकार ने 4 मार्च 1958 को नीति प्रस्ताव स्वीकर किया और मुख्य रूप से यह जवाहर लाल नेहरू की वजह से तैयार हुआ था। इसमें ऐसे कई वाक्य हैं जो कई मौलिक सिद्धांतों को दृढ़तापूर्वक प्रस्तुत करते हैं। विशेषतौर पर इसमें कहा गया है 'सिर्फ वैज्ञानिक पद्धति और तौर-तरीकों के द्वारा तथा वैज्ञानिक ज्ञान के जरिये ही तार्किक सामग्री, सांस्कृतिक सुविधाओं और सेवाओं को समुदाय के प्रत्येक सदस्य के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है...' और, 'विज्ञान ने मानव विकास और संस्कृति के प्रसार को इस हद तक बढ़ाया जितना पहले कभी संभव नहीं था.... इसने चिंतन के लिए नए औजार उपलब्ध कराये और मनुष्य के मानसिक क्षितिज को विस्तृत किया। इस तरह इसने जीवन के मूलभूत मूल्यों को प्रभावित किया और सभ्यता को नयी जीवन शक्ति और गतिशीलता प्रदान की।'

विज्ञान नीति प्रस्ताव ने वही कहा जिसे जवाहर लाल नेहरू ने पहचाना था कि विज्ञान सिर्फ पेशेवर वैज्ञानिकों या बौद्धिक अभिजात वर्ग के लिए ही नहीं है, बल्कि इसका सरोकार संपूर्ण समाज से है और इसमें सभी शामिल है। मुझे इस तर्क की ओर विस्तृत व्याख्या करने दें। विज्ञान को अक्सर ज्ञान के एक विशाल संग्रह के तौर पर जाना जाता है, या फिर उन जटिल यंत्रों और उपकरणों के रूप में जो विशेष योग्यता की मांग करते हैं। जिस तरह आज हम इन्हें इस्तेमाल करते हैं, इसमें कोई शक नहीं है कि ये विज्ञान का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। परन्तु मुख्य रूप से विज्ञान अन्वेषण की भावना को व्यक्त करता है और यह सही तर्क करने की प्रक्रिया पर आधारित है। सबसे महत्वपूर्ण है वैज्ञानिक पद्धति जिसमें शामिल हैं-अवलोकन और पैमाइश का विश्लेषण, एक अवधारणा या सिद्धांत का निर्माण जो पैमाइश पर फिट बैठ सके। फिर उसका सामान्यीकरण जिसके परिणामस्वरूप अन्य परिघटनाओं की भविष्यवाणी की जा सके और इसके लिए तथा अवधारणा या परिकल्पना की परख के लिए प्रयोग और गणनाएं, ऐसी स्व-संगत परिकल्पनाओं और प्रयोगों का निर्माण जो अपने आप में ठीक हों, इत्यादि। यहां किसी के प्राधिकार की स्वीकार्यता नहीं है। अंततः वही स्वीकार किया जाता है, जिसे तथ्यों को प्रमाणित करने को इच्छुक किसी व्यक्ति द्वारा स्वतंत्र रूप से प्रमाणित किया जा सके। वैज्ञानिक तरीको को सिर्फ उन संकीर्ण परिधियों में ही इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, जिन्हें हम विज्ञान के तौर पर परिभाषित करते हैं। वैज्ञानिक तरीके समान्य प्रयोजन के लिए उपयोगी हैं। इस तार्किक, वस्तुनिष्ठ और जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्रसार जवाहर लाल नेहरू हमारे समाज में देखना चाहते थे और उन्होंने इस बेहद सटीक तौर पर वैज्ञानिक मनोवृत्ति के तौर पर उद्धृत किया था।

वैज्ञानिक मनोवृति का प्रसार

वैज्ञानिक मनोवृत्ति के विकास में शामिल है-एक सामंजस्यपूर्ण वैज्ञानिक समुदाय का विकास जो न सिर्फ अपने पेशेवर कार्य में विज्ञान की तकनीक और उपकरणों के कुशलतापूर्वक इस्तेमाल के प्रति सरोकार रखता हो, बल्कि जांच-पड़ताल और विश्लेषण के उन तर्कसंगत और वस्तुनिष्ठ तरीकों के प्रति भी गहन रूप से प्रतिबद्ध हो जो विज्ञान की खासियत रहे हैं। इस बात को सुनिश्चित करना कि वैज्ञानिक तरीके और व्यापक अर्थों में तार्किक ढंग से सोचने की प्रक्रिया राष्ट्रीय कार्यों के सभी पहलुओं पर निर्णय लेने में इस्तेमाल हो, खासतौर से इस तरह कि वह सबको दिखायी दे, और विज्ञान के तरीके और भावना संपूर्ण समाज के मन में घर कर जाए। यह सब कैसे संभव किया जा सकता है? मेरी राय में इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षा है। आवश्यकता है कि शिक्षा व्यवस्था का एक नया ढांचा बनाया जाए।

वर्तमान पद्धति में ज्ञान का एक पहाड़ विद्यार्थियों की छाती पर रख दिया जाता है, जिसे रटने और याद करने के बाद कुछ मौकों पर उन्हें उगल देना होता है। इसी जगह हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को अपने आसपास के वातावरण से जोड़ना चाहिए। हम सभी को बच्चों से जुड़े होने का सौभाग्य प्राप्त है। उनकी दुनिया को जानने और समझने की हमेशा अतृप्त रहने वाली इच्छाओं और उनके द्वारा अक्सर पूछे जाने वाले ऐसे प्रश्नों को जो असुविधाजनक हैं, जिनके जवाब देना कठिन है, हम सभी नोटिस करते हैं। वर्तमान शिक्षा जिज्ञासा और जांच पड़ताल की इस भावना को प्रोत्साहित करने के बजाय उसे खत्म कर देती है। मैं जोर देकर कहना चाहूंगा कि वह सभी कुछ जो हम सामान्यतः बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं, जैसे-नाम, भाषा, गणित, विज्ञान, नैतिक मूल्य, इतिहास के बुनियादी लक्षण, भूगोल इत्यादि। उस अनुभव के द्वारा सिखाया जाता है जो उन्हें अपने निकट आस-पड़ोस में हासिल है और यह उनके लिए बेहद दिलचस्प

और उत्साहजनक होगा, होना ही चाहिए। इसके अलावा यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों को उसी भाषा में सिखाया जाए जिससे वे मूल रूप से परिचित हैं। अगर उन्हें उस भाषा में पढ़ाया जाता है, जिससे वे स्वयं ही अपरिचित हैं, तब उन्हें जो पढ़ाया जा रहा है उसे सही-सही समझने और अपनी बात समझाने में उन्हें कठिनाई होगी। एक विद्यार्थी उसी भाषा-शैली और अन्तर्वस्तु को बिना किसी भटकाव के ठीक उसी पूर्णता के साथ अपनाता है जैसा कि उसे पढ़ाया गया है। यह विज्ञान की भावना के एकदम खिलाफ है जो स्वतंत्र चिंतन और अभिव्यक्ति की आजादी की मांग करती है।

वैज्ञानिक तरीके से समस्याओं का समाधान

वैज्ञानिक जागृति के प्रसार में एक महत्वपूर्ण तत्व यह सुनिश्चित करना है कि देश में किया जाने वाला अधिकांश वैज्ञानिक कार्य अन्यत्र किए जाने वाले कार्यों की नकल हो। इसके बजाय, उसे वास्तव में अपने देश और अपने निकट परिवेश में पेश आने वाली समस्याओं से प्रेरित होना चाहिए और इन समस्याओं का हल वैज्ञानिक तरीकों से निकालने का प्रयास करना चाहिए। भले ही यह कार्य विज्ञान के अग्रणी कार्यों में शुमार न हो या महान अंतरराष्ट्रीय महत्व को न समझा जाए। एक सतत प्रक्रिया होनी चाहिए जिसके तहत वैज्ञानिक समुदाय और समाज उन समस्याओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के जरिये हल करने की कोशिश करें, जिनका वे सामना करते हैं। यही वह सर्वश्रेष्ठ तरीका है जिससे वैज्ञानिक मनोवृत्ति का प्रसार किया जा सकता है। चूंकि विज्ञान अंतरराष्ट्रीय है इसलिए यह आवश्यक है कि विज्ञान के अग्रणी क्षेत्रों में काम करने वाले ऐसे सचमुच प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों की जरूरत है, जिनका कार्य नकल से प्रेरित न होकर, वास्तविक अन्तःप्रेरणा पर आधारित हो। विज्ञान की लोकप्रियता को अक्सर वैज्ञानिक मनोवृत्ति के प्रसार के साथ उलझा दिया जाता है। मैं यहां जोर देकर कहना चाहूंगा कि विज्ञान की लोकप्रियता वैज्ञानिक चेतना के प्रसार का एक हिस्सा मात्र है। हमारे समाज के लिए निश्चय ही यह बेहद महत्वपूर्ण है कि उसे हमारे देश में होने वाले वैज्ञानिक प्रयासों और विज्ञान की उपलब्धियों के बारे में बताया जाए और साथ उस प्रगति के बारे में भी जो दुनियाभर में हो रही है। परन्तु लोकप्रियता की प्रक्रिया अक्सर ज्ञान को आसान शब्दों में व्यक्त करने तक सीमित रहती है। महत्वपूर्ण यह है कि उस भावना को व्यक्त किया जाए कि इस ज्ञान को हासिल कैसे किया गया। यहां विज्ञान को एक चमत्कार और जादू की छड़ी मानने की प्रवृत्ति है जो सभी समस्याओं को खुद-ब-खुद हल कर देगी। इस मिथक को समाप्त करने की आवश्यकता है। हमें यह जान लेना होगा कि समाज को स्वयं ही समस्याओं को हल करना होगा और समाज के अंदर खुद इसे हल करने की क्षमताएं हैं, जिनमें इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल करने की क्षमता भी शामिल है।

नंबर सफलता की कसौटी नहीं

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दसवीं, बारहवीं परीक्षा के नतीजों की घोषणा के साथ ही फिर सबका ध्यान इस बात पर केंद्रित हो गया कि अव्वल कौन रहा! गौरतलब है कि सीबीएसई के नतीजों में इस साल लगभग 87 फीसदी छात्र-छात्राएं उत्तीर्ण हुए। यह आंकड़ा पिछले साल के मुकाबले करीब 5 प्रतिशत कम है। यानी अगर नतीजों को ही मानक मानें तो बहुत सारे विद्यार्थियों की पढ़ाई की गुणवत्ता में गिरावट आयी है। माना जा रहा है इस साल नतीजों में गिरावट की वजह परीक्षा के प्रारूप में बदलाव है, जिसके तहत सीसीई यानी निरंतर एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को इस बार लागू नहीं किया गया था। पर सवाल है कि क्या परीक्षाओं में ज्यादा से ज्यादा नंबर लाना ही बेहतर नतीजों का पैमाना होना चाहिए? विडंबना है कि इस सवाल के बरक्स विकसित हुई व्यवस्था में लोगों के बीच यह धारणा बनी है कि अगर उनके बच्चों को अच्छे नंबर नहीं मिले तो उन्हें बेहतर भविष्य की दौड़ से बाहर मान लिया जाएगा। इस सोच का प्रत्यक्ष फायदा यह दिख रहा है कि बच्चों ने पढ़ाई-लिखाई पर खुद को केंद्रित किया और परीक्षाओं में काफी अच्छे नंबर हासिल कर रहे हैं। मगर इसका दूसरा पहलू चिंताजनक है।

यों पिछले साल की अपेक्षा नतीजों के प्रतिशत में कमी के बावजूद विद्यार्थियों की कुल कामयाबी पर खुश हुआ जा सकता है। पर कड़वी हकीकत यह भी है कि नतीजों की घोषणा के बाद कई विद्यार्थियों के खुदकुशी कर लेने की खबरें आईं। वजह सिर्फ यह थी कि इन बच्चों को लगभग 70 या 60 फीसदी अंक हासिल हुए थे। जान गंवाने वाली एक बच्ची की फिक्र यह थी कि अब वह विज्ञान विषय से पढ़ाई नहीं कर पाएगी, क्योंकि स्कूल वाले उसका दाखिला ही नहीं लेंगे। और एक बच्चे को कम नंबर आने की वजह से उसके अभिभावकों ने फटकार लगाई। सवाल है कि यह कौन-सी व्यवस्था बनती गई कि परीक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक नंबर न ला पाने पर बच्चों को कमतर मान लिया जाता है? यह कैसी मानसिकता है कि ज्यादा नंबरों को अभिभावकों ने प्रतिष्ठा का पर्याय बना लिया है और उसे बच्चों के जीवन के मुकाबले ज्यादा अहम मान लिया है। जबकि दुनियाभर में ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि पढ़ाई में सामान्य उपलब्धि वाले बहुत सारे बच्चों ने ज्यादा नंबर पाने वालों के मुकाबले दूसरे क्षेत्रों में ऊंचे मुकाम हासिल किए या बेहतर इंसान के रूप में मशहूर हुए।

दरअसल हमारे यहां परीक्षा में नंबरों की अहमियत इसलिए भी है कि ज्यादा नंबर लाने वाले विद्यार्थियों को बेहतर कॉलेजों में दाखिला मिलता है और कम नंबर लाने वालों को कमतर कहे जाने वाले कॉलेजों में किसी तरह से जगह मिल पाती है। जरूरत इस बात की है कि सभी स्कूलों और कॉलेजों में गुणवत्ता आधारित शिक्षा के स्तर को एक समान बनाया जाए, ताकि पढ़ाई विद्यार्थियों के लिए सहज जीवन का हिस्सा हो। स्कूल-कॉलेजों की शिक्षा उनके भीतर मौजूद योग्यता या क्षमता में निखार का जरिया बने, न कि उनके लिए गलाकाट प्रतिस्पर्धा साबित हो। किसी भी परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास होना सबकी ख्वाहिश होती है और यह स्वाभाविक है। लेकिन अगर ज्यादा नंबर लाने की जद्दोजहद एक खास तरह के तनाव में तब्दील हो जाए तो यह सोचने की जरूरत है कि बच्चों की पढ़ाई उनकी जिंदगी संवारने के लिए होनी चाहिए या उन्हें एक अंतहीन होड़ में झोंक देने के लिए!

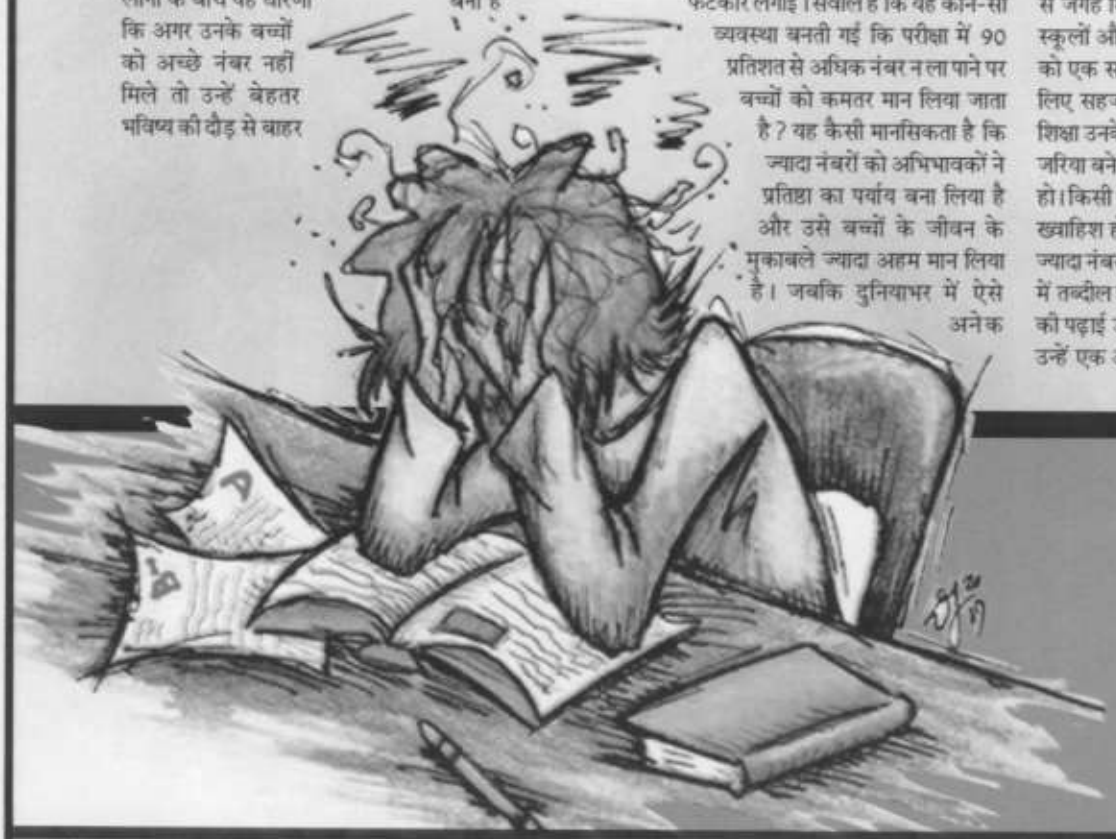

खो रहा है बचपन

स्वतंत्रता के समय कल्पना की गई थी कि सभी छात्रों को शिक्षा के समान अवसर मिलेंगे। यह सपना फिलहाल टूट चुका है। शिक्षा में अनेक प्रकार की असमानताएं ही बढ़ रही हैं। प्रतिस्पर्धा इतनी अधिक है कि माता-पिता प्रारंभ के वर्षों में ही बच्चों पर लगातार दबाव शुरू कर देते हैं। वे एक ओर माता-पिता की इच्छाओं की पूर्ति के बोझ तले दबते हैं तो दूसरी ओर पुस्तकों के बोझ से। इसमें उनका बचपन खो रहा है।

थोपें नहीं बच्चे की भी सुनें

नंबर ही जिंदगी में सब कुछ नहीं होते, अभिभावकों को यह फार्मूला अपनाना होगा। अपने बच्चे का मनोबल बढ़ाएं और खुद के साथ उनमें भी सकारात्मक सोच विकसित करने का प्रयास करें। नंबर कम आने पर व्यावहारिक दिक्कतें हो सकती हैं। असफलता से सीखने की कोशिश करें। जरूरत पड़ने पर काउंसलर की मदद भी ली जा सकती है। बच्चों को एक्सरसाइज, मेडिटेशन, योगा करने के लिए प्रेरित करें। साथ ही अपने परिवार में पढ़ाई और रिजल्ट को लेकर खुली बहस करें। इसमें बच्चा भी अपनी बात ठीक से रख सकेगा। समस्या भी पता चलेगी।

10
दिनों तक बच्चा गुमशुम रहे तो इसे गंभीरता से लें, डॉक्टर को दिखाएं

60
से 70 प्रतिशत अंक को बहुत कम माना जा रहा है इन दिनों

90
अंक आने पर भी निराश रहते हैं कई अभिभावक

20
प्रतिशत से अधिक बच्चे रिजल्ट के बाद रहते हैं तनाव में

अपने बच्चे का भरोसा जीतें

नंबर कम आने पर बच्चा डिप्रेशन में जा सकता है। डांट पड़ने पर उसे भी गुस्सा आता है। यह ठीक नहीं। ऐसी स्थिति में अभिभावकों को अपना संयम बरकरार रखना चाहिए। यह न हो कि अभिभावक ही झुंझलाने लगें कि मैं इसके भले के लिए कह रहा हूं और यह नाराज हो रहा है। यह समय उसे आत्मबल प्रदान करने का होता है। उसे खुद यह बताने की कोशिश करें कि वह दुनिया का पहला बच्चा नहीं है कि उसे कम नंबर आए हैं। देश-विदेश में ऐसे हजारों सफल व्यक्ति हैं, जिन्हें पढ़ाई में कम नंबर आए लेकिन वे शीर्ष पदों पर पहुंचे। बड़े उद्योगपति भी बने।

खुलकर तारीफ करें

जब बच्चे का रिजल्ट खराब हो तो तब भी उसकी खुलकर तारीफ कर सकते हैं। उसे बता सकते हैं कि तुममें आगे अच्छा करने की बहुत क्षमता है। खेलों समेत अन्य प्रतियोगिताओं में अगर पहले उसने अच्छा किया है तो आप उसका उदाहरण दे सकते हैं कि कैसे उसने दूसरे क्षेत्रों में सफलता अर्जित की है। खुद के साथ अपने परिवार का मान भी बढ़ाया। उन पलों के बारे में अच्छी बातें सुनकर उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। निश्चय ही वह भविष्य में पढ़ाई के साथ ही अन्य दूसरी गतिविधियों में भी बेहतर करने की कोशिश करेगा और समाधान की राह निकलेगी।

जब बच्चा ज्यादा तनाव में हो

अगर बच्चे में 10-15 दिनों तक उदासी का दौर बना रहता है तो उसे डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। जिस तरह ब्लड प्रेशर, थायरॉयड या फिर दूसरी बीमारियों के इलाज के लिए डॉक्टर की जरूरत पड़ती है, उसी तरह तनाव के लिए भी डॉक्टर से मदद लेना जरूरी है। इसके लिए साइकोलॉजिस्ट या साइकाइट्रिक्स से मिल सकते हैं। अगर समस्या ज्यादा नहीं है तो साइकोलॉजिस्ट से मिलना चाहिए। वह बच्चे की काउंसिलिंग करके समस्या दूर करने की कोशिश कर सकता है। अगर दिक्कत ज्यादा हो तो साइकाइट्रिक्स की मदद लेनी पड़ती है। वह दवाएं भी दे सकता है।

तर्क-बुद्धि व विज्ञान की रोशनी में जीना सीखें

महात्मा बुद्ध ने कहा है - 'अप्प दीपो भवः' अर्थात् अपना प्रकाश खुद बनो, अपना गुरु खुद बनो, अपने विवेक का प्रयोग करना सीखो। महात्मा बुद्ध की इसी शिक्षा को डॉ. आंबेडकर ने भी अपनाया था और देश के दलितों को एक नया नेतृत्व प्रदान करने का प्रयास किया था। इसलिए उनके इस सामाजिक बदलाव और न्याय की सोच का देश लोहा मान रहा है।

केंद्र के छात्र-छात्राओं के नाम निदेशक का पत्र

प्रिय छात्र-छात्राओं,

आप हमारे समाज के सजग और संवेदनशील नागरिक हैं। आपके घर वाले आपसे एक अच्छी नौकरी की अपेक्षा रखते हैं। जीवन जीने के लिए यह जरूरी भी है। अधिक नहीं, केवल चार-पांच घंटे के परिश्रम से ही आप सफलता की किसी भी ऊंचाई को छू सकते हैं। इस केन्द्र के सैकड़ों छात्रों ने ऐसा करके दिखा दिया है- आप भी ऐसा करके दिखा सकते हैं...।

विभिन्न नौकरियों में जाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने के अलावा यह केन्द्र अपने छात्रों को एक प्रबुद्ध नागरिक भी बनाता रहा है। स्वस्थ समाज के लिए यह जरूरी है। इसी कारण आपसे भी मेरी कुछ अपेक्षाएं हैं-

आप, भगवान नहीं विज्ञान में विश्वास करें। तर्क, बुद्धि और विज्ञान की रोशनी में जीना सीखें।

अपने जीवन और समाज से जुड़ी समस्याओं का निदान-समाधान खोजने के लिए तर्क का सहारा लें, बुद्धि की शरण में जायें, ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश में घटनाओं का विश्लेषण कर सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने की पहल करें। दुनिया के प्रायः सभी विकसित देशों के नागरिकों ने यही किया है और आपको भी इसी का अनुकरण और अनुसरण करके आगे निकलना है।

प्रिय छात्रों, यहां यह भी उल्लेखनीय है कि जो देश जितना ही धार्मिक है वह उतना ही पिछड़ा हुआ है। भारत भी एक धार्मिक देश और इसके पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण वहां के लोगों की अतिधार्मिकता भी है। यह के धार्मिक लोग अक्सर आस्था और विश्वा का हवाला देकर अपनी धार्मिकता को कायम रखने का प्रयास करते हैं पर यह एक बहुत बड़ा भ्रम है। आस्था या विश्वास किसी व्यक्ति का अच्छा गुण नहीं माना जाता है। यह पिछड़ेपन की पहचान है। आस्था और विश्वास की जगह हमें कौतूहल, जिज्ञासा, तर्क, बुद्धि और वैज्ञानिक सोच का सहारा लेना चाहिए। ई. वी. रामासामी पेरियार, ज्योतिबा फुले और डॉ. आंबेडकर की रचनाओं की भी मूल ध्वनि यही रही है। हमारे इन महान समाज सुधारकों और सामाजिक बदलाव के पुरोधाओं ने अपनी रचनाओं में बार-बार इस बात का जिक्र किया है कि हमें तार्किक, बौद्धिक और वैज्ञानिक सोच अपनाकर जीने की आदत डालनी चाहिए।

महात्मा बुद्ध ने भी यही कहा है - 'अप्प दीपो भवः' अर्थात् अपना प्रकाश खुद बनो, अपना गुरु खुद बनो, अपने विवेक का प्रयोग करना सीखो। महात्मा बुद्ध की इसी शिक्षा को डॉ. आंबेडकर ने भी अपनाया था और देश के दलितों को एक नया नेतृत्व प्रदान करने का प्रयास किया था। इसी कारण आज पूरा देश डॉ. आंबेडकर की इस सामाजिक बदलाव और सामाजिक न्याय की सोच का लोहा मान रहा है।

देश के नागरिकों के लिए दुर्भाग्य की बात है कि आज बिना सिर-पैर की धार्मिक आस्थाओं तथा अन्य प्रकार के निरर्थक और आम जनता को गुमराह करने वाली कपोल, कल्पित मन गढ़ंत, धार्मिक भावनाओं की बातें

तरह-तरह के हथकंडों को अपनाकर लोगों के बीच लाने की साजिश चल रही है। धार्मिक आडम्बरों का साम्राज्य खड़ा किया जा रहा है। डॉ. आंबेडकर ने हमें इस बात के लिए सावधान किया है। साथ ही हिन्दू धर्म की मनगढ़ंत और अतार्किक, अबौद्धिक और अवैज्ञानिक सोच को भी उजागर करने का प्रयास किया।

प्रिय छात्रों, प्राकृतिक संसाधनों से युक्त भारत एक अमीर देश है, पर हम भारतीय गरीब हैं। खासकर पिछड़े और दलित। लेकिन आप छात्रों को यह जानकारी होनी चाहिए कि भारत का सबसे ज्यादा सोना यहां के मंदिरों की तिजोरियों में कैद है, जो अमेरिका के कुल सोने से भी ज्यादा बताया जाता है। सारिका के संपादक स्व. कमलेश्वर के अनुसार देश के मंदिरों की सम्पत्ति से इस देश का ढाई वर्ष का खर्च चलाया जा सकता है। इसी संदर्भ में यह बता दें कि वर्ष 2001 में थाईलैंड की अर्थव्यवस्था बेपटरी हुई थी तो वहां का एक नागरिक जो राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत था और अमेरिकी बौद्ध भिक्षु बन गया था, उसने अपनी ओर से इतना अधिक सोना और खरबों डॉलर थाई सरकार को दान देकर अपने देश की डगमगाती अर्थव्यवस्था को संभाल लिया था। यहां के भी मंदिर के पुजारियों को उस बौद्ध भिक्षु से सबक लेकर इस देश के गरीब नागरिकों के लिए कुछ इसी तरह का काम करना चाहिए।

छात्रों, आज वैज्ञानिक प्रगति जीवन को सहज सरल और सुचारू बनाती हुई एक वरदान के रूप में हमें सुखी बनाने में लगी है। मगर भारतवर्ष में टेलीविजन जो वैज्ञानिक वरदान का जीता जागता प्रमाण है, का बहुत दुरुपयोग हो रहा है। जब हम टेलीविजन जैसे यंत्र पर रुद्राक्ष की माला अथवा मृत्युंजय मंत्र की बिक्री का प्रचार होते देखते हैं तो अपना माथा पीटकर रह जाते हैं। यह तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के दुरुपयोग की पराकाष्ठा है।

आज सरकार की नाक के नीचे बापू आसाराम जैसे निठल्ले साधु-संत पल रहे हैं और अंधविश्वास व पाखंड के नाम पर भोले-भाले गरीब लोगों को लूटा जा रहा है। वर्ष 2013 में केदारनाथ में हुए जल-प्रलय से न जाने कितने घरों का चिराग बुझ गया। न जाने कितने परिवार पूरी तरह जल मग्न हो गए। जहां इस प्राकृतिक आपदा पर आंसू बहाया जा रहा था, उसी दौरान 9 अगस्त 2013 के नवभारत टाइम्स में संपादक के नाम लिखी भगवती प्रसाद मिश्र, देवप्रयाग, गढ़वाल की एक छोटी सी चिट्ठी ने सारे देश को झकझोर कर रख दिया। चिट्ठी इस प्रकार है- ''केदारनाथ घाटी में आई बाढ़ के बाद वहां लूटपाट, छीना-झपटी और चोरी की वारदातें भी खूब हुईं। एक-एक रोटी पांच सौ रुपए में बिकी। यह वह क्षेत्र है, जिसे हिन्दुओं की देवभूमि कहते हैं। वहां के लोग हिन्दू श्रद्धालुओं को लूटने में नंबर एक पर रहे। वहीं हर्षिल में बौद्ध धर्म के अनुयायी आये थे, जिन्होंने फंसे हुए यात्रियों की बहुत सेवा की। केदारनाथ घाटी में साधु बने लोगों के पास से 7 करोड़ 14 लाख रुपए मिले। असल में केदारनाथ में ही हिन्दू धर्म का जनाजा निकाला, जहां हिन्दुओं ने हिन्दुओं को लूटा। इस पर विश्व हिन्दू परिषद जैसे संगठनों ने कहीं कोई टिप्पणी नहीं की..... और हिन्दुओं के बाबा केदारनाथ यह सब खेल-तमाशा चुपचाप अपनी आंखों से देखते रहे ...।

हमारा भारत ऐसा देश है, जहां कुछ लोग आस्था के नाम पर बौद्धिक विकलांगता की हद तक पहुंच जाते हैं। चूंकि तार्किक ढंग से सोचने-विचारने की प्रक्रिया उनकी आस्था पर प्रहार करती है और अंधविश्वास को चोट पहुंचाती है। अतः ये लोग अपनी अंधी आस्था के बचाव में लग जाते हैं।

गौरी लंकेश, कुलवर्गी, पंसारे और नरेन्द्र दाभोलकर जैसों की हत्या करके अंधविश्वासों को जीवित रखना आज भारत का मुख्य धर्म बन गया है। जिस विश्वास की सांसें विचारों की हत्या के दम पर चलती हों, उसे धर्म के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है? क्या यह धार्मिक आतंकवाद नहीं है, जहां खुद को 'संत' कहने वाले कुछ लोग गुंडई और दबंगई पर उतारू हो जाते हैं?

बच्चों, आज हमारा देश अंधविश्वास के दलदल में फंसा है। हमारे धर्मों के ठेकेदार पण्डा, पुरोहित, राजनीतिक नेता, टीवी चैनल और निरीह सरकार इस दावानल में पेट्रोल छिड़कने का काम कर रही है। इस देश की जनता के हित-सुख की सुध लेने वाले हमें दूर-दूर तक कोई नहीं दिखता। इस देश को बचाने का कार्य केवल और केवल इस देश के बुद्धिवादी और तर्कशील नागरिक ही अपने वैज्ञानिक चिंतन के बल कर सकते हैं। सरकार को चाहिए कि वह अंधविश्वास को जिन्दाबाद करने वालों के हाथ की कठपुतली बनने की बजाय बुद्धिवादियों के हाथ मजबूत करे। टेलीविजन पर चलने वाले फालतू कार्यक्रमों पर अंकुश लगाए और बुद्धिवादी, तर्कशील और वैज्ञानिक विचारधारा वाले कार्यक्रमों को प्रमुखता से प्रस्तुत होने दे, ताकि भविष्य में किसी गौरी लंकेश, कुलवर्गी, पन्सारे और नरेन्द्र दाभोलकर को अपनी जान से हाथ न धोना पड़े।

अतः प्रिय छात्र-छात्राओं आप सबों से अनुरोध है कि आप अपने जीवन में तार्किकता, बौद्धिकता एवं वैज्ञानिक सोच को अधिक से अधिक उतारें और अपने समाज के अंदर भी फैलाने का प्रयास करें। आपके प्रशिक्षण एवं अध्ययन की सार्थकता इसी में है। मेरी समझ से एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए यह एक आवश्यक शर्त है-इसे याद रखें। अपार शुभकामनाओं के साथ-

आप सबों का शुभचिंतक
रमा शंकर आर्य (निदेशक)

प्रखर प्रेरणा का स्रोत है प्री-एग्जामिनेशन ट्रेनिंग सेंटर

जीवन की व्यस्तता और जरूरतों की प्राथमिकता को कुछ देर स्थगित करके प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र, पटना विश्वविद्यालय की ओर देखना अवसरों की एक ऐसी शृंखला का अनुभव कराता है, जिसका संसर्ग न केवल मन के वेगवान प्रवाह को झरने की तरह अभिराम व ओजमय बना देता है, अपितु अज्ञात की ओर छलांग लगाने का अद्भुत साहस भी देता है। इस केन्द्र से मेरा जुड़ाव स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के दौरान हुआ। गुरुवर आदरणीय प्रो. रमाशंकर आर्य जी के निर्देशन में यह केन्द्र सफलता के सोपानों पर तीव्र गति से अग्रसर था। मैं वहां यूजीसी नेट की तैयारी हेतु कुछ कक्षाओं में उपस्थित रहता था। गुरुवर प्रो. रमाशंकर आर्य जी दर्शनशास्त्र के उद्भट आचार्य तो थे ही, सामान्य अध्ययन पर उनकी असाधारण पकड़ का एहसास प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र की कक्षाओं में बैठकर हुआ। माना जाता है कि जैसे हमारे विचार होते हैं, हमारा व्यक्तित्व भी वैसा ही हो जाता है। परंतु हमारे विचारों को मांजने-संवारने का कार्य प्रो. रमाशंकर आर्य जैसे पुरोधा आचार्यगण ही करते हैं।

अपने अध्ययन काल के प्रमुख शिक्षकों में मैं आंग्ल भाषा के सेवानिवृत्त आचार्य प्रो. शैलेश्वर सती प्रसाद का उल्लेख करना चाहूंगा जो इस केन्द्र में पढ़ाने के साथ-साथ हमलोगों का मनोवैज्ञानिक उन्नयन भी करते थे। डॉ. राज राजेश इस केन्द्र से जुड़े एक अन्य महत्वपूर्ण तथा प्रसिद्ध शिक्षक हैं, जिनकी कक्षाओं का लाभ मैंने उठाया। समय के प्रवाह में कुछेक शिक्षकों के नाम विस्मरित हो चुके हैं, परंतु यह उन सभी योग्य आचार्यों का शिक्षण ही है जिससे हमें जीवन का ठोस और सुनिश्चित आलम्ब उपलब्ध है। मैं अपने उन सभी शिक्षकों के प्रति कृतज्ञताभाव प्रकट करता हूं।

पटना विश्वविद्यालय में संचालित प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र मेरी दृष्टि में कई कारणों से प्रशंसनीय है। प्रथम कारण तो स्वयं मेरे गुरुदेव प्रो. रमाशंकर आर्य हैं। पाठक इसे एक शिष्य का उद्गार नहीं, वरन् जीवन अनुभव की वास्तविकता पर उद्धत शब्द समझें। हम भीड़, हलचल और कोलाहल में जीने के आदी तो हैं ही, उच्चस्तरीय पाखंड भी हमारी खासियत है। ऐसी स्थिति में जिस केन्द्र के निदेशक का स्पष्ट मंतव्य हो कि नियत चिह्नों पर चलने तथा लकीरें पीटने से न शिक्षा का लक्ष्य पूरा होता है और न समाज का ही भला होता है। उस केन्द्र को शोहरत की बुलंदियों पर पहुंचने से कौन रोक सकता है? जैसे बुद्ध का ध्यान आते ही त्याग व तपस्या की लकीर उभर आती है, ठीक वैसे ही आदरणीय प्रो. आर्य के नाम के साथ ही पटना विश्वविद्यालय में संचालित प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र की तस्वीर सहज रूप से उभर आती है। अस्तु ऐसे समाज में जहां निजीकरण ही संपूर्ण यथार्थ है तथा शिक्षा, रोजगार और सेहत जैसी बुनियादी जिम्मेदारियां भी निजी क्षेत्र के हवाले होती जा रही हैं, वहां समाज कल्याण विभाग, बिहार सरकार द्वारा सम्पोषित इस केन्द्र की उत्तरोत्तर सफलता निस्संदेह प्रशंसनीय है।

अंत में कुछ बातें अपने उन अनुजों से करनी है जो इन दिनों प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केन्द्र के अंग हैं। आपको यह समझना होगा कि किडनी परिवर्तन का अर्थ भाग्य परिवर्तन नहीं होता है। मशहूर साइकोथेरेपिस्ट डॉ. ऐमि मॉरिन का कहना है कि - ''किसी को इतना हक नहीं देना चाहिए कि वह आपकी सोच को 'कंट्रोल' कर ले।'' संस्कृति तथा परंपरा द्वारा यंत्रबद्ध पूरे अस्तित्व से इसकी अभिप्सा जगानी होगी। कमजोर तबके के छात्र-छात्राओं को स्वयं को सहज बनाना ही होगा। यह कार्य जितनी जल्दी हो उतना बेहतर। आपके उज्ज्वल व सार्थक भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

-डॉ. मो. जियाउल हसन
सहायक आचार्य व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग
मगध महिला महाविद्यालय, पटना

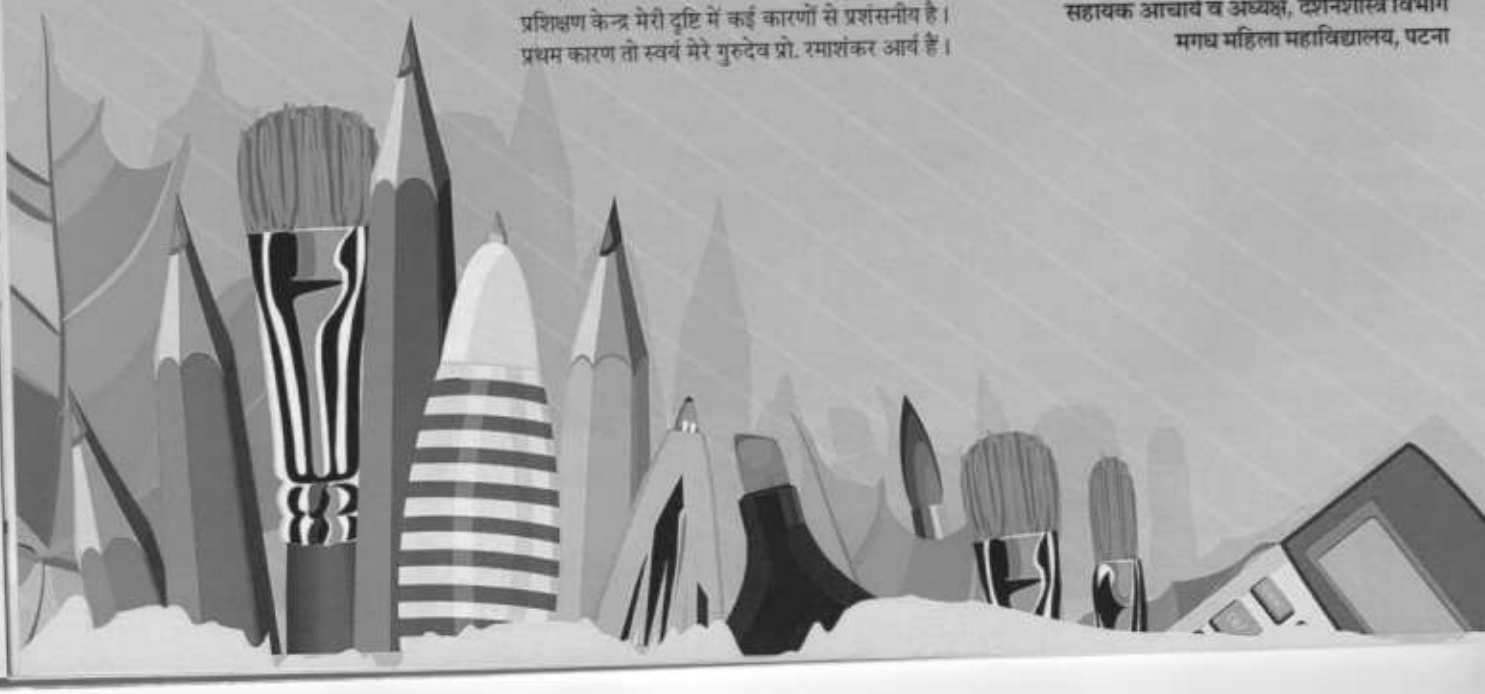

यहां जीवन को सही मुकाम हासिल हुआ

बात सन् 2003 की है। उस समय मैं सिविल सर्विस की तैयारी के लिए पटना में था और हिन्दुस्तान समाचार पत्र में यहां प्रशिक्षण के लिए विज्ञापन निकला था। मैंने अपने मित्रों से बातकर विज्ञापन के अनुसार प्रारंभिक परीक्षा के लिए (नामांकन के लिए) फार्म भरा और दो घंटे की परीक्षा (वैकल्पिक) दी। मैं सौभाग्यशाली था कि इसमें मेरा चयन हो गया। बड़े उत्साह के साथ मैंने यहां नामांकन लिया और आंखों में भविष्य को बेहतर बनाने का सपना लिए पढ़ाई और तैयारी शुरू कर दी। मेरी पहली मुलाकात आदरणीय डॉ. रमाशंकर आर्य सर से हुई, जो यहां निदेशक हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि डॉ. आर्य सर एक कुशल प्रशासक और खासकर हमारे जीवन के पथ प्रदर्शक हैं। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं कि मैं खांटी देहात से पटना में तैयारी के लिए आया था। जब पटना की चकाचौंध को देखा तो मेरा सिर चकरा गया। एक तरफ गरीबी हमेशा यह अहसास करा रही थी कि तुम इस दुनिया के लिए नहीं बने हो तो दूसरी तरफ जीवन की आकांक्षाएं आगे बढ़ने के लिए उद्वेलित कर रही थीं। इस ऊहापोह भरी जिंदगी में डॉ. आर्य सर का मार्ग दर्शन हमें काफी सुकून देने वाला साबित हुआ। उन्होंने हमेशा उत्साह बढ़ाया और कहा कि तुम जरूर अपनी गरीबी व पारिवारिक समस्या का निदान कर लोगे। भविष्य में यह सही साबित हुआ। आज मैं भारतीय रेल सेवा में हूं और यहां के सैकड़ों ऐसे बच्चों को जानता हूं जो पूरे देश में भिन्न-भिन्न विभागों में जाकर देश की सेवा कर रहे है। मैं इस प्रशिक्षण केंद्र के छात्र-छात्राओं से विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूं कि इसका वास्तविक उपयोग करें और अपने सुनहरे भविष्य का निर्माण सुनिश्चित करें। मैं यहां बिना किसी उद्देश्य के आया था लेकिन गुरुजनों के निर्देशन में एक मुकाम बनाने में सफल रहा।

दो शब्द संस्था से जुड़े प्रतियोगियों के लिए-

गिरकर उठना, उठकर चलना
यह कर्म है पुरुषार्थ का
कर्मवीर को फर्क न पड़ता
किसी जीत या हार का।

-एकलव्य कुमार ज्योति
भारतीय रेल सेवा, (पूर्व छात्र)

समाज के कमजोर तबके लिए वरदान

मेरा चयन 48वीं-52वीं बीपीएससी में हुआ था। कुल 363 चयनित अभ्यर्थियों में मेरा स्थान 32वां था। इस परीक्षा में दर्शनशास्त्र और श्रम एवं समाज कल्याण मेरे विषय थे। मेरे पिता जी मो. शफीक अहमद विवि शिक्षक के रूप में रिटायर हुए। मेरी भी हार्दिक इच्छा थी कि एक व्याख्याता के रूप में देश के भावी भविष्य से जुड़ा रहूं। परन्तु, नियति ने कुछ और ही निर्धारित किया था। बिहार प्रशासनिक सेवा में आकर कई वर्षों की ओर दृष्टि डालता हूं तो अहसास होता है कि मेरे स्वभाव व व्यवहार में जो गति आई है उसके पीछे श्रद्धेय प्रो. रमाशंकर आर्य जी के निर्देशन में चल रहे प्राक् परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र की महती भूमिका रही है। मुझे याद है उन दिनों गुरुदेव प्रो. आर्य जी ने इंटरव्यू बोर्ड में जाने से पहले मॉक इंटरव्यू (छद्म साक्षात्कार) की व्यवस्था कराई थी। उसका काफी सकारात्मक प्रभाव मुझ पर पड़ा और इंटरव्यू बोर्ड में इसका परिणाम स्पष्टतः दिख गया। समाज के कमजोर तबके के छात्रों के लिए यह केन्द्र वरदान साबित हो रहा है। समाज कल्याण विभाग, बिहार सरकार द्वारा सम्पोषित इस केन्द्र की उपलब्धियों को देखते हुए मैं बिहार सरकार के प्रति भी धन्यवाद प्रकट करता हूं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन विषयों एवं शिक्षकों-यथा, डॉ. एम. रहमान, डॉ. रजा, राजेश के लिए छात्र बाहर आस संजोए रहते हैं, वे यहां के छात्र-छात्राओं के लिए सहज भाव से सुलभ हैं। इस केन्द्र में शिक्षकों की उपलब्धता एवं उत्कृष्टता के संबंध में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि श्रेष्ठ के समीप बैठकर श्रेष्ठता का अनुभव करने का एक अप्रितम उदाहारण पटना विश्वविद्यालय में संचालित यह केन्द्र है। वर्तमान के प्रशिणार्थियों से यह पूरी आशा है कि जो अवसर उन्हें उपलब्ध हो रहे हैं, वे उसका सार्थक उपयोग करेंगे। एक बार पुनः गुरुदेव प्रो.(डॉ.) रमाशंकर आर्य जी के श्रीचरणों में आदरभाव समर्पित करता हूं। जय हिन्द !

-डॉ. इश्तियाक अजमल
वरीय उपसमाहर्ता, गया

आज भी काम आ रही बहुमूल्य सलाह

मैं सिविल सर्विसेज परीक्षाओं की तैयारी के दिनों से ही प्री-एग्जामिनेशन ट्रेनिंग सेंटर से जुड़ी हूं। मैं यहां अपना कैरियर संवारने के सपने लेकर आई थी। मुझमें बहुत उत्साह था लेकिन मुझसे भी ज्यादा जुनून था यहां के अच्छे शैक्षणिक अनुभव वाले शिक्षकों में। वे हर छात्र को तराशने में जुटे थे। यहां के शिक्षकों की बहुमूल्य सलाह, बेहतर मार्गदर्शन का आगे बहुत फायदा मिला। इंटरव्यू क्लासेज तो मेरे कैरियर में मील का पत्थर साबित हुए। मैं अभारी हूं डॉ. आरएस आर्या सर का जिनके सहयोग और मार्गदर्शन की वजह से मैं अपने लिए सही कैरियर का चयन कर सकी। आज मैं शिक्षक हूं। इस अनुभव के आधार पर यह कह सकती हूं कि छात्रों की सफलता और उनके ऊंचाई पर पहुंचने में एक अच्छे संस्थान और मार्गदर्शक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। प्री-एग्जामिनेशन ट्रेनिंग सेंटर में इन सबका समावेश है। कई दशक से यह केंद्र गरीब छात्रों का पथ प्रदर्शक बना हुआ है। यह सब आर्या सर और यहां के गुरुजनों के सम्मिलित प्रयास का परिणाम है। मुझे पूरा विश्वास है कि आगे यह केंद्र और प्रगति करेगा। हजारों मेधावियों के कैरियर को ऊंची उड़ान देने का आधार बनेगा। भविष्य में मेरी भी जरूरत पड़ी तो यहां के छात्रों को प्रोत्साहित करने और मार्गदर्शन के लिए तैयार हूं। मेरे लक्ष्य को मंजिल तक पहुंचाने वाली प्री-एग्जामिनेशन ट्रेनिंग सेंटर की टीम को हार्दिक शुभकामनाएं।

-नम्रता, असिस्टेंट प्रोफेसर
मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय

हमारे पुस्कालयों की जो भी लागत हो, उसकी कीमत एक अज्ञानी राष्ट्र की तुलना में बिल्कुल ही कम है।
-वॉल्टर क्रोंकाइट

शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसे आप दुनिया बदलने में इस्तेमाल कर सकते हैं।
-नेल्सन मंडेला

शिक्षा का मतलब ये नहीं कि आपने कितना कुछ याद किया हुआ है। इसका मतलब है आप जो जानते हैं और जो नहीं जानते हैं उसमें अंतर कर पाना।
-अनाटोले फ्रांस

शिक्षा जिंदगी की तैयारी नहीं बल्कि शिक्षा खुद ही जिंदगी है।
-जॉन डेवे

आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, आप एक आदमी को ही शिक्षित करते हैं। आप एक औरत को शिक्षित करते हैं, आप एक पूरी पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।
-बर्मिंघम यंग

दुनिया एक किताब है और जो घूमते नहीं वो केवल एक पन्ना पढ़ते हैं। **-ऑगस्टीन ऑफ हिप्पो**

आधुनिक शिक्षक का कार्य जंगल की कटाई करना नहीं बल्कि रेगिस्तान की सिंचाई करना है। इस बात को समझना बहुत जरूरी है।
-सीएस लुइस

बिना दिल को शिक्षित किए, दिमाग को शिक्षित करना कोई शिक्षा नहीं है। **-ऑगस्टीन ऑफ**

बच्चे ये याद रखने की कोशिश नहीं करते कि आपने उन्हें क्या पढ़ाने की कोशिश की। वे यह याद रखते हैं कि आप क्या हैं।
-जिम हेंसन

आपका दिमाग भरा जाने वाला पात्र नहीं बल्कि जलाई जाने वाली आग है।
-प्लूटॉर्क

जो कोई भी सीखना छोड़ देता है, चाहे 20 पे या 80 पे बूढ़ा है। जो कोई भी सीखता रहता है वही जवान रहता है।
-हेनरी फोर्ड

फॉर्मल एजुकेशन आपको जीविका दे देगी, सेल्फ एजुकेशन आपको अमीर बना देगी।
-जिम रौन

जितना अधिक मैं जीता हूं, उतना अधिक मैं सीखता हूं। जितना अधिक मैं सीखता हूं, उतना अहसास होता है कि मैं कितना कम जानता हूं। **-मिशेल लीग्रैंड**

जिस दिन हमारे सिग्नेचर ऑटोग्राफ में बदल जाएं, मान लीजिए आप कामयाब हो गए।
-एपीजे अब्दुल कलाम

शिक्षा, शिक्षा है। हमें सब कुछ सीखना चाहिए और फिर चुनाव करना चाहिए कि हमें किस मार्ग पर चलना है। शिक्षा न वेस्टर्न है न ही ईस्टर्न।
-मलाला युसूफजई

अगर आपको लगता है कि शिक्षा महंगी है तो अज्ञानता को ट्राई कर लीजिए। **-रॉबर्ट ऑर्बेन**

निर्देश कक्षा के बाहर समाप्त हो जाते हैं, लेकिन शिक्षा जीवन के साथ ही समाप्त होती है।
-फ्रेडरिक डब्ल्यू रॉबेत्से

युवा पीढ़ी को इस काबिल बनाना कि वो जीवन भर अपने आप को प्रशिक्षित करती रहे, यही शिक्षा का असली उद्देश्य है।
-रॉबर्ट मेनार्ड हुत्चिंस

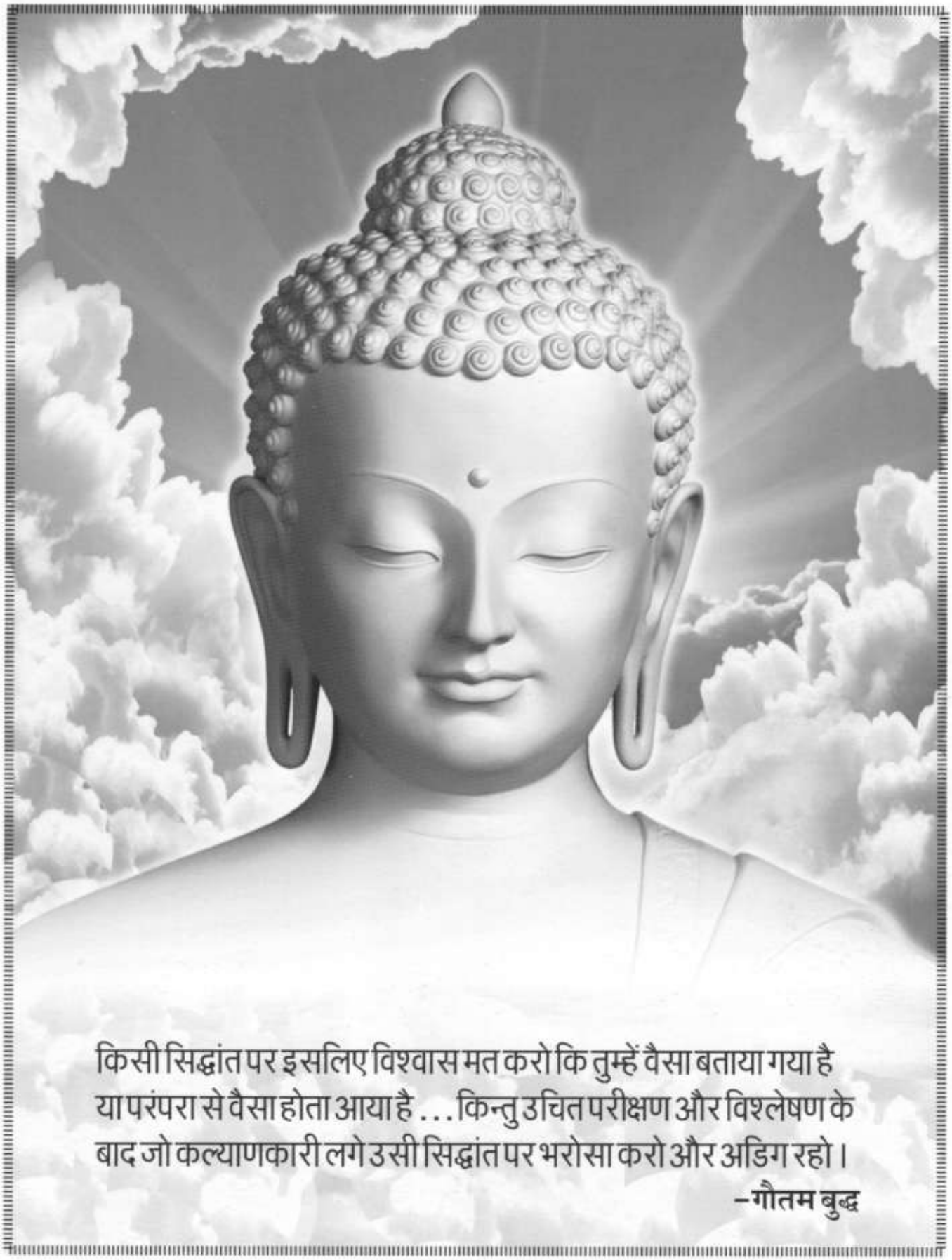

किसी सिद्धांत पर इसलिए विश्वास मत करो कि तुम्हें वैसा बताया गया है या परंपरा से वैसा होता आया है . . . किन्तु उचित परीक्षण और विश्लेषण के बाद जो कल्याणकारी लगे उसी सिद्धांत पर भरोसा करो और अडिग रहो।

–गौतम बुद्ध

धरोहर

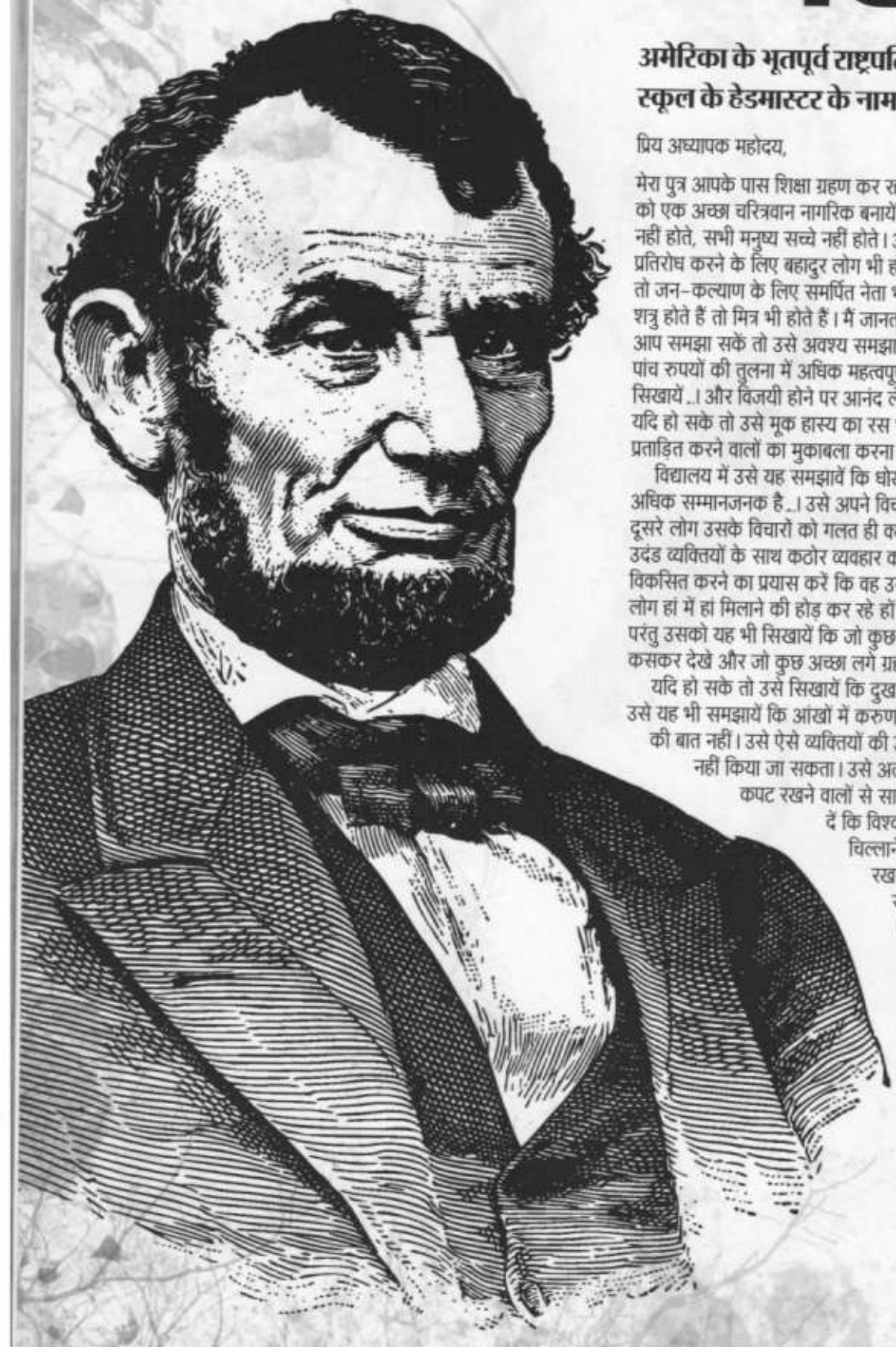

अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का पत्र स्कूल के हेडमास्टर के नाम जिसमें उनका बेटा पढ़ता था

प्रिय अध्यापक महोदय,

मेरा पुत्र आपके पास शिक्षा ग्रहण कर रहा है। आपसे नम्र निवेदन है कि आप मेरे पुत्र को एक अच्छा चरित्रवान नागरिक बनायें। यह भी समझायें कि सभी मनुष्य न्यायप्रिय नहीं होते, सभी मनुष्य सच्चे नहीं होते। आप उसे यह भी समझायें कि दुष्टों का प्रतिरोध करने के लिए बहादुर लोग भी होते हैं और यदि स्वार्थी राजनीतिक होते हैं तो जन-कल्याण के लिए समर्पित नेता भी अवश्य होते हैं। उसे यह बोध करायें कि शत्रु होते हैं तो मित्र भी होते हैं। मैं जानता हूं कि यह कार्य श्रम-साध्य है, किंतु यदि आप समझा सकें तो उसे अवश्य समझायें कि कमाया हुआ एक रुपया पाये गये पांच रुपयों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। आप उसे खेल भावना में हारना सिखायें..। और विजयी होने पर आनंद लेना भी सिखायें। उसे ईर्ष्या से दूर ले जायें। यदि हो सके तो उसे मूक हास्य का रस भी सिखायें। उसमें यह समझ पैदा करें कि प्रताड़ित करने वालों का मुकाबला करना सबसे आसान होता है।

विद्यालय में उसे यह समझावें कि धोखा देने की तुलना में असफल होना कहीं अधिक सम्मानजनक है..। उसे अपने विचारों पर विश्वास रखने की सीख दें, चाहे दूसरे लोग उसके विचारों को गलत ही क्यों न कहें। उसे सज्जनों के साथ विनम्र एवं उदंड व्यक्तियों के साथ कठोर व्यवहार करना सिखायें। मेरे पुत्र में ऐसी दृढ़ता विकसित करने का प्रयास करें कि वह उस समय का अनुकरण न करे, जिसमें सब लोग हां में हां मिलाने की होड़ कर रहे हों। उसे सबकी बात सुनने की शिक्षा दें। परंतु उसको यह भी सिखायें कि जो कुछ वह सुनता है उसे सत्य की कसौटी पर कसकर देखे और जो कुछ अच्छा लगे ग्रहण करे।

यदि हो सके तो उसे सिखायें कि दुख के क्षणों में मुस्कुराया कैसे जाता है और उसे यह भी समझायें कि आंखों में करुणा, प्रेम या संवेदना के आंसू भरना लज्जा की बात नहीं। उसे ऐसे व्यक्तियों की उपेक्षा करना सिखायें जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उसे अत्यधिक मधुर बोलने वालों किंतु हृदय में कपट रखने वालों से सावधान रखना भी सिखायें..। उसे यह शिक्षा दें कि विश्वास के दाम न लगने दे। उसे चीखने-चिल्लाने वाली उग्र भीड़ की ओर से कान बंद रखना सिखायें..। और यदि वह अपने पक्ष को सही मानता है तो उस पर दृढ़ रहकर संघर्ष करने की भी उसे शिक्षा दें।

उसके साथ सौम्य व्यवहार तो करें किंतु आवश्यकतानुसार कठोरता भी बरते, क्योंकि केवल अग्नि परीक्षा से ही उत्तम फौलाद निर्मित होता है। उसमें अच्छे कार्यों के लिए अधीर होने का साहस भी विकसित करें और साहसी बनने का धैर्य भी। उसे मानव जाति से परमविश्वास रखने की शिक्षा दें। मैं आपसे बहुत अपेक्षा कर रहा हूं। आप विचार करें कि मेरे बेटे के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं...।

एक अभिभावक (अब्राहम लिंकन)